परमेश्वर की उपस्थिति

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2026

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org
बाइबल-विश्वासियों की व्याख्या: believersbiblecommentary.com

(Hindi – The Presence of God)

परमेश्वर की उपस्थिति

विषयसूची

परिचय

1. परमेश्वर के और अधिक 1
2. उनकी उपस्थिति में 23
3. उनकी उपस्थिति के प्रत्यक्ष प्रकटीकरण 34
4. उनकी उपस्थिति की अग्नि 44
5. उनकी उपस्थिति की ज्योति 53
6. उनकी उपस्थिति की वर्षा 59
7. उनकी उपस्थिति की महिमा 62
8. उनकी उपस्थिति की सामर्थ्य 71
9. सामूहिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति का स्वागत 75

परिचय

यह पुस्तक मूलतः परमेश्वर के वचन से परमेश्वर की महिमामयी उपस्थिति के विषय में एक अध्ययन है। इसका उद्देश्य यह प्रस्तुत करना है कि बाइबल परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में क्या प्रकट करती है, ताकि विश्वासियों को प्रेरणा और उत्साह मिले कि वे परमेश्वर को खोजें और उनकी उपस्थिति के लिए अधिक भूखे हों।

यद्यपि इस पुस्तक में व्यक्तिगत विचार या व्याख्या बहुत अधिक नहीं है, फिर भी मैं आपको, पाठक को, आमंत्रित करता हूँ कि यहाँ संकलित बाइबल के वचनों पर मनन करें। परमेश्वर के वचन में डूब जाएँ, जो उनकी उपस्थिति के विषय में बताता है। अपनी जीवन में उनकी उपस्थिति को आमंत्रित करें। जब आप उनकी खोज करें, तब उनकी उपस्थिति का अनुभव करने की आशा रखें। उनकी उपस्थिति के लिए अधिक भूखे और प्यासे रहें।

पुराने और नये नियम में प्रभु की "उपस्थिति" का वास्तविक अर्थ प्रभु को "देखना" है। उनकी उपस्थिति में होने का अर्थ है, कि आप ऐसे स्थान पर हों, जहाँ आप उनके चेहरे को देख रहे हों। आप उनके चेहरे को निहारते हों। आप प्रभु की शोभा को देखते हों। आप परमेश्वर के आमने-सामने रहें। जब आप ऐसा करते हैं, तब आप प्रभु की उपस्थिति में होते हैं।

अन्य विश्वासियों के साथ एकत्र हो जाएं, और सामूहिक रूप से प्रभु और उनकी उपस्थिति को खोजें।

पृथ्वी पर किसी भी वस्तु की तुलना उनके साथ रहने और उनकी उपस्थिति का अनुभव करने से नहीं की जा सकती है।

उनके लिए और अधिक व्याकुल हो जाएँ!

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
परमेश्वर के और अधिक

मूसा ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने परमेश्वर का बहुत अधिक अनुभव किया। उन्होंने जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर से भेंट की (निर्गमन 3:1-5)। वह ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने परमेश्वर की सुनाई देने वाली वाणी को सुना। वह परमेश्वर की लाठी को लेकर चला और उसने मिस्र में परमेश्वर को महान चमत्कार करते हुए देखा। उन्होंने खंभे की आग में और बादलों पर परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति को देखा। जब वह परमेश्वर की प्रजा को प्रतिज्ञात देश की ओर ले जा रहे थे, तब यात्रा के दौरान उन्होंने अद्त चमत्कारों को देखा। । उन्होंने परमेश्वर से "आमने-सामने" भेंट भी की (निर्गमन 19:9; निर्गमन 16-20; निर्गमन 33:9-11) और दो अवसरों पर वह 40 दिन तक परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति में बिना भोजन के रहे, जहाँ परमेश्वर की महिमा ने उन्हें संभाला (निर्गमन 24:12-18; निर्गमन 34:28-30)। परमेश्वर ने मूसा को आश्वासन दिया कि उनकी उपस्थिति का दूत उनकी प्रजा के साथ जाएगा (निर्गमन 23:20-23; निर्गमन 32:34; निर्गमन 33:2; यशायाह 63:9) और यहाँ तक कि मूसा को परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति की भी प्रतिज्ञा दी (निर्गमन 33:14)।

इन सभी महिमामयी भेंटों और सामर्थी अनुभवों के बाद भी, मूसा ने प्रार्थना की, *"मुझे अपना तेज दिखा दे"* (निर्गमन 33:18)। वाह! यह परमेश्वर के लिए उनकी और अधिक भूख को दर्शाता है।

हम अपने जीवन में परमेश्वर को कितनी मात्रा में अनुभव कर सकते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है। यह पूर्ण रूप से हम पर निर्भर है कि हम उनके और उनकी उपस्थिति के लिए भूखे और प्यासे हों।

वह अनंत है। उनकी कोई सीमा नहीं है। हम जितनी इच्छा करें, उतना अधिक हम उन्हें *"चख सकते हैं और देख सकते हैं"*!

भजन संहिता 34:8
परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है!
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उनकी शरण लेता है।

हमने परमेश्वर का जो अनुभव किया है और उनका जो स्वाद चखा है, वह उनकी समस्त वास्तविकता की तुलना में बहुत ही थोड़ा है। अभी भी परमेश्वर का बहुत कुछ है जिसका हम अनुभव कर सकते हैं।

भजन संहिता 145:3
यहोवा महान् और अति स्तुति के योग्य है,
और उनकी बड़ाई अगम है।

यह अध्ययन मूलतः बाइबल से एक संकलन है, जिसका उद्देश्य आपको परमेश्वर के लिए और अधिक भूखा होने के लिए प्रेरित करना है।

परमेश्वर के लिए और अधिक भूखे बनना

बाइबल के इन वचनों पर विचार करें जो परमेश्वर के लिए और अधिक भूख प्रकट करते हैं — उनकी उपस्थिति में उनके साथ रहने की लालसा।

भजन संहिता 27:4,8
4 एक वर मैं ने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न
में लगा रहूँगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में
रहने पाऊँ, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि
लगाए रहूँ, और उनके मन्दिर में ध्यान किया करूँ।
8 तू ने कहा है, "मेरे दर्शन के खोजी हो।"

इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है,
"हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।"

क्या हम भी ऐसे स्थान पर आ सकते हैं जहाँ केवल *"एक ही बात"* हो जिसके लिए हम इतने व्याकुल हों, और वह यह कि हम उनकी उपस्थिति में उनके साथ रहें? उनकी सुंदरता को निहारना यह है, कि हम उनके स्वरूप की महानता से मोहित और अभिभूत हो जाएँ कि वह कौन है — उनकी महिमा, उनकी महानता, उनकी असीम कृपा, भलाई, और भी बहुत कुछ।

परमेश्वर हमें अपने दर्शन खोजने के लिए आमंत्रित करते हैं। वह आपसे और मुझसे कहते हैं, *"मेरे दर्शन के खोजी बनो।"* उनके दर्शन को खोजने का अर्थ यह है कि हम प्रभु की सुंदरता पर अपनी दृष्टि स्थिर रखें, इस लालसा के साथ कि हम उन्हें और अधिक जान सकें। हम इस बात से आकर्षित हो जाते हैं कि वह कौन है। हम उनमें इतने मग्न हो जाते हैं कि उन्हीं में खो जाते हैं। हमारा ध्यान उन्हीं पर होता है। हमारे विचार उनकी महिमा से बंधे रहते हैं। हम पूरी तरह उनकी महानता में डूब जाते हैं। हम उनकी महान महिमा की शोभा से पूरी तरह मोहित हो जाते हैं। हम उनके प्रति आदर और विस्मय में खड़े रहते हैं। हम उत्सुक हैं कि वह हमसे क्या कहना चाहते हैं। हम प्रतीक्षा करते हैं कि वह अपनी इच्छा के अनुसार हम पर कार्य करें। हम उनके दर्शन की खोज करते हैं।

भजन संहिता 42:1,2
[1] जैसे हरिणी नदी के जल के लिये
हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ।
[2] जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ,
मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह
दिखाऊँगा?

परमेश्वर के लिए हमारी भूख कितनी तीव्र है? जैसे एक हिरणी जो

अभी-अभी किसी शिकारी के पीछा करने से बची हो और जल के लिए प्यास से हाँफ रही हो, क्या हमारा अंतर्मन भी उसी प्रकार परमेश्वर और उनकी उपस्थिति के लिए प्यासा है? हमें परमेश्वर के लिए, उनके और अधिक के लिए, अत्यन्त प्यासा हो जाना चाहिए।

भजन संहिता 63:1,2,8
[1] हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है,
मैं तुझे यत्न से ढूँढूँगा;
सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर,
मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा
अति अभिलाषी है।
[2] इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ पर
दृष्टि की,
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ।
[8] मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता है;
और मुझे तो तू अपने दाहिने हाथ से
थाम रखता है।

जिस प्रकार हमारा शारीरिक शरीर गर्म और सूखे समय में, जल के लिए व्याकुल हो जाता है, उसी प्रकार हमारी आत्मा को परमेश्वर के लिए प्यासा होना चाहिए। परमेश्वर के लिए यह तीव्र लालसा दाऊद को "भोर के समय" परमेश्वर को खोजने के लिए प्रेरित करती थी, अर्थात् वह सुबह जल्दी उठकर पूरे मन से उनका पीछा करते थे। परमेश्वर के लिए यह आंतरिक लालसा इतनी प्रबल थी कि दाऊद कहते हैं कि उनका शरीर भी परमेश्वर के लिए लालसा करता है। वह परमेश्वर के साथ एक स्पर्शनीय (छूने योग्य) भेंट की इच्छा रखते थे। परमेश्वर और उनकी उपस्थिति के लिए इस हद तक लालसा करने में, कि हमारा शरीर भी परमेश्वर का महसूस करना चाहे, इसमें कुछ भी गलत नहीं है। दाऊद पवित्रस्थान में परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा को देखने की लालसा रखते थे। हमारी परमेश्वर की खोज हमें यह चाहने के लिए प्रेरित करनी चाहिए कि जब हम उनके पवित्र स्थल में एकत्र हों, तो

हम उनकी शक्ति और महिमा के प्रकट होने का अनुभव करें।

भजन संहिता 73:25
स्वर्ग में मेरा और कौन है?
तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।

क्या हम ऐसी अवस्था में पहुँच सकते हैं जहाँ हम पृथ्वी पर किसी और चीज़ की इच्छा न रखें, सिवाय प्रभु के!

भजन संहिता 84:1-4
1 हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या
ही प्रिय हैं!
2 मेरा प्राण यहोवा के आँगनों की अभिलाषा
करते करते मूर्च्छित हो चला;
मेरा तन मन दोनों जीवते परमेश्वर को पुकार रहे।
3 हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा और मेरे
परमेश्वर, तेरी वेदियों में
गौरैया ने अपना बसेरा
और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है
जिसमें वह अपने बच्चे रखे।
4 क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं;
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे।

भजन संहिता 84 के ये पद फिर से परमेश्वर के लिए ऐसी ही तीव्र भूख का वर्णन करते हैं। उनका हृदय और तन "पुकार उठता" है, अर्थात् वास्तविक रूप से जीवते परमेश्वर के लिए "जोर से चिल्लाना" । भजनकार अपनी लालसा के विषय में बहुत स्पष्ट, बहुत ऊँचे स्वर में और भावपूर्ण तरीके से व्यक्त करता है। जैसे एक गौरैया अपने लिए घोंसला ढूँढ़ती है, वैसे ही भजनकार ने परमेश्वर की उपस्थिति में विश्राम और शरण का स्थान पाया। यही वह स्थान था जहाँ वह "बस जाने" वाले थे।

यशायाह 26:9
रात के समय मैं जी से तेरी लालसा करता हूँ,
मेरा सम्पूर्ण मन यत्न के साथ तुझे ढूँढ़ता है।
क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं,
तब जगत के रहनेवाले धर्म को सीखते हैं।

परमेश्वर के लिए हमारी भूख हमारी दैनिक दिनचर्या को प्रभावित करती है। ऐसे समय होते हैं जब उनके लिए हमारी लालसा हमें रात में जगाए रखती है। और ऐसे भी समय होते हैं जब हम केवल उन्हें खोजने के लिए भोर में उठ जाते हैं। क्या परमेश्वर के लिए आपकी भूख आपकी दैनिक दिनचर्या को प्रभावित कर रही है? क्या आप उनके और अधिक के लिए एक जुनून से भरते जा रहे हैं?

परमेश्वर उन लोगों को उत्तर देते हैं जो उनके लिए भूखे हैं

यह जानना अद्‌त है, कि परमेश्वर के प्रति हमारी भूख का उत्तर परमेश्वर देते हैं।

यशायाह 44:3,4
[3] क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा;
मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा।
[4] वे उन मजनुओं के समान बढ़ेंगे
जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं।

परमेश्वर अपनी आत्मा को, जल और बाढ़ के समान उन पर उंडेलेंगे, जो प्यासे हैं — जो उस सूखी भूमि के समान हैं जो गिरने वाली हर एक बूँद को सोख लेते हैं। हमारे लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि वह प्यासे पर जल उंडेलेंगे। परमेश्वर हम पर अपनी आत्मा को उंडेने का इंतेज़ार कर रहे हैं। क्या हम उनके लिए प्यासे होंगे?

यिर्मयाह 29:13
तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

हमें यह पूर्ण आश्वासन दिया गया है कि जब हम अपने पूरे मन से उनका पीछा करके उन्हें खोजेंगे, तो हम उन्हें पाएँगे। उनकी खोज में हमारी महनत व्यर्थ नहीं जाएगी। जब हम उन्हें खोजें, तो हमें यह आशा रखनी चाहिए कि हम "उन्हें पाएँगे," अर्थात् ऐसे सामर्थी तरीकों से उनसे भेंट करेंगे जैसा पहले कभी न हुआ हो।

मत्ती 5:6
"धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।

परमेश्वर के राज्य में ऐसी कुँजियाँ हैं, जो आशीषों के द्वार खोलती हैं। "भूख और प्यास" — आत्मा की बातों के लिए निरन्तर, अतृप्त, गहरी और व्याकुल लालसा — हमेशा "तृप्त किए जाने" की आशीष को खोलती है। हमें ऐसी आत्मिक स्थिति में होना चाहिए जहाँ भले ही हम भरे हुए हों , हमें और अधिक के लिए अत्यन्त भूखे होना चहिए। यह तर्कसंगत नहीं लगता, परन्तु आत्मा में हमें ऐसा ही होना है — उनसे परिपूर्ण, और फिर भी उनके और अधिक के लिए अत्यन्त भूखे और प्यासे!

इब्रानियों 11:6
और विश्वास बिना उन्हें प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

जब हम परमेश्वर के पास आते हैं, तो दो बातों के विषय में हमें निश्चित (विश्वास) होना चाहिए। पहली, कि परमेश्वर जीवित हैं। और दूसरी, *कि जो लोग लगन से उन्हें खोजते हैं वह उनका प्रतिफल देते* हैं। स्पष्ट है, कि लगन से उन्हें खोजने वालों का प्रतिफल, वह **स्वयं** हीहैं। इससे बड़ा कोई प्रतिफल नहीं हो सकता! हमारा उन्हें लगन से खोजना ही कुंजी है। "लगन से" शब्द के लिए जो यूनानी शब्द है, उसके ये अर्थ हैं — खोज निकालना, जाँच करना, लालसा करना, माँग

करना, आराधना करना, पूछताछ करना, सावधानी से खोज करना। आईए हम उन्हें लगन से खोजें, क्योंकि वह हमें स्वयं को प्रतिफल के रूप में देंगे!

याकूब 4:8अ
परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।

कितना अद्‌त आश्वासन है, कि जब हम परमेश्वर के निकट जाएँगे, तो वह निश्चय ही हमारे निकट आएँगे। परमेश्वर को खोजने में बिताया गया समय, व्यर्थ बिल्कुल नहीं है। जब परमेश्वर हमारे जीवन में आते हैं, तो हमारे साथ, हमारे भीतर, और हमारे संसार में अद्‌त बातें घटती हैं।

हमें परमेश्वर के और अधिक के लिए, भूखा होना चाहिए।

मैं उनकी उपस्थिति में कैसे प्रवेश करूँ

पुराने नियम का वह तम्बू जिसे मूसा ने जंगल में बनाया था, स्वर्गीय पवित्रस्थान — सच्चे स्वर्गीय तम्बू — की प्रतिरूप और छाया है।

इब्रानियों 8:1,2,5
[1] अब जो बातें हम कह रहे हैं उनमें से सबसे बड़ी बात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन् के सिंहासन के दाहिने जा बैठा है,
[2] और पवित्रस्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन् प्रभु ने खड़ा किया है।
[5] वे स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं; जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उन्हें यह चेतावनी मिली, "देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उनके अनुसार सब कुछ बनाना।

प्रकाशितवाक्य 11:19अ
तब परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है वह खोला गया, और उनके मन्दिर में उनकी वाचा का सन्दक दिखाई दिया

इसलिए, पृथ्वी का तम्बू हमें सच्चे स्वर्गीय तम्बू के विषय में कुछ सिखाता है।

मूसा का तम्बू

निर्गमन अध्याय 25-27 और अध्याय 40 में हमें उस तम्बू का वर्णन मिलता है, जिसे मूसा ने बनाया था। मूल रूप से, तम्बू के तीन भाग थे — बाहरी आँगन, भीतरी आँगन (जिसे पवित्रस्थान भी कहा जाता है), और परमपवित्र स्थान (या अतिपवित्र स्थान)।

बाहरी आँगन

बाहरी आँगन में होमबलि की वेदी और धोने के लिए पीतल की हौदी (बर्तन) था।

होमबलि की वेदी

निर्गमन 27:1,2

1 "फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की, पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनवाना; वेदी चौकोर हो, और उनकी ऊँचाई तीन हाथ की हो।
2 और उनके चारों कोनों पर चार सींग बनवाना; वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों, और उन्हें पीतल से मढ़वाना।

धोने के लिए पीतल की एक हौदी

निर्गमन 30:17-21

17 यहोवा ने मूसा से कहा,
18 "धोने के लिये पीतल की एक हौदी, और उनका पाया भी पीतल का बनाना। उन्हें मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच में रखकर उनमें जल भर देना;
19 और उनमें हारून और उनके पुत्र अपने अपने हाथ पाँव धोया करें।
20 जब जब वे मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें तब तब वे हाथ पाँव जल से धोएँ, नहीं तो मर जाएँगे; और जब जब वे वेदी के पास सेवा टहल करने, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएँ तब तब वे हाथ पाँव धोएँ, न हो कि मर जाएँ।
21 यह हारून और उनके पीढ़ी पीढ़ी के वंश के लिये सदा की विधि ठहरे।"

बाहरी आँगन को भीतरी आँगन से अलग करने के लिए, बीच में एक परदा था।

भीतरी आँगन (पवित्रस्थान)

भीतरी आँगन में भेंट की रोटियों की मेज, दीपस्तंभ, और धूप की वेदी थी।

भेंट की रोटियों की मेज और दीपस्तंभ

निर्गमन 26:30,35-37

30 और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया गया है।

35 और उस परदे के बाहर निवास के उत्तर की ओर मेज़ रखना; और उनके दक्षिण की ओर मेज़ के सामने दीवट को रखना।

36 फिर तम्बू के द्वार के लिये नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ एक परदा बनवाना।

37 और इस परदे के लिये बबूल के पाँच खम्भे बनवाना, और उनको सोने से मढ़वाना; उनकी कड़ियाँ सोने की हों, और उनके लिये पीतल की पाँच कुर्सियाँ ढलवा कर बनवाना।

निर्गमन 27:20

"फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देना, कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के निकाला हुआ जैतून का निर्मल तेल ले आना, जिससे दीपक नित्य जलता रहे।

धूप की वेदी

निर्गमन 30:1-9

1 "फिर धूप जलाने के लिये बबूल की लकड़ी की वेदी बनाना।

2 उनकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और उनकी ऊँचाई दो हाथ की हो, और उनके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ।

3 और वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर के बाजुओं और सींगों को चोखे सोने से मढ़ना, और इसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाना।

4 और इसकी बाड़ के नीचे इसके आमने–सामने के दोनों पल्लों पर सोने के दो दो कड़े बनाकर इसके दोनों ओर लगाना, वे इसके उठाने के डण्डों के खानों का काम देंगे।

5 डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनाकर उनको सोने से मढ़ना।
6 और तू उसको उस परदे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दक के सामने है, अर्थात् प्रायश्चित्त वाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुझ से मिला करूँगा।
7 और उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया करे; प्रतिदिन भोर को जब वह दीपक को ठीक करे तब वह धूप जलाए,
8 और गोधूलि के समय जब हारून दीपकों को जलाए तब धूप जलाया करे, यह धूप यहोवा के सामने तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में नित्य जलाया जाए।
9 उस वेदी पर तुम किसी अन्य प्रकार का धूप न जलाना, और न उस पर होमबलि और न अन्नबलि चढ़ाना; और न उस पर अर्घ देना।

परमपवित्र स्थान (अतिपवित्र स्थान)

भीतरी आँगन (पवित्रस्थान) को परमपवित्र स्थान (अतिपवित्र स्थान) से अलग करने के लिए, बीच में एक परदा था। परमपवित्र स्थान में प्रायश्चित्त का स्थान और वाचा का सन्दक था।

निर्गमन 26:30-34
30 और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया गया है।
31 "फिर नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का एक बीचवाला परदा बनवाना; वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बने।
32 और उसको सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खम्भों पर लटकाना, इनकी अंकड़ियाँ सोने की हों, और ये चाँदी की चार कुर्सियों पर खड़ी रहें।
33 और बीचवाले परदे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर, उनकी आड़ में साक्षीपत्र का सन्दक भीतर ले जाना, इस प्रकार वह बीचवाला परदा तुम्हारे लिये पवित्रस्थान को परमपवित्र स्थान से अलग किये रहे।
34 फिर परमपवित्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दक के ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को रखना।

निर्गमन 25:21,22
21 और प्रायश्चित्त के ढकने को सन्दक के ऊपर लगवाना; और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूँगा उन्हें सन्दक के भीतर रखना।

22 मैं उनके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूँगा; और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएँ मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभों के विषय मैं प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूँगा।

परमेश्वर ने कहा कि वह परमपवित्र स्थान में ही महायाजक से मिलेंगे और उससे बातें करेंगे। यही वह स्थान था जहाँ कोई परमेश्वर से मिल सकता था और उनका अनुभव कर सकता था। तथापि, मूसा के समय में केवल महायाजक ही परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था और वह भी एक वर्ष में एक बार (लैव्यव्यवस्था 16)। इस बहुमूल्य स्थान की पहुँच अत्यन्त सीमित थी!

हमारा आत्मिक अनुभव: सच्चे तंबू में प्रवेश करना

जैसा कि हमने पहले कहा था, प्राकृतिक तंबू हमें आत्मिक सच्चाइयों के बारे में सिखाता है। यह हमें इस बात की समझ देगा, कि जब हम आत्मा में परमेश्वर के सच्चे स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश करते हैं, तो हम किन बातों से होकर गुजरते हैं।

इब्रानियों 10:19-22
19 इसलिये हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है,
20 जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है,
21 और इसलिये कि हमारा ऐसा महान् याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है,
22 तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ।

यीशु के लहू और मसीह के क्रूस पर किए गए पूर्ण कार्य के द्वारा, अब हम परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते हैं! हमें दिन के चौबीसों घंटे में, हर समय, किसी भी वक्त उस अंतरतम स्थान में प्रवेश करने

का अधिकार है, जिस स्थान में, हम परमेश्वर से मिलते हैं और उनकी वाणी सुनते हैं!

फिर भी, बाइबल हमें यह चुनौती देती है कि हम निकट आएँ। परमेश्वर के निकट आना, पूरी तरह हम पर निर्भर है। हम "बाहरी आँगन के विश्वासी" हो सकते हैं, या शायद एक कदम और आगे बढ़कर "भीतरी आँगन के विश्वासी" बन सकते हैं, या फिर हम पूरी तरह आगे बढ़कर वे बन सकते हैं जो "निकट पहुँचते" हैं। यह पूरी तरह हम पर निर्भर है!

इब्रानियों 6:19,20
[19] वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुँचता है,
[20] जहाँ यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अगुआ के रूप में प्रवेश किया है।

हमारी "आशा" है, कि हम परमेश्वर की उस उपस्थिति में जाएँ, जो *"परदे के भीतर"* है, अर्थात परमपवित्र स्थान में, जहाँ यीशु हमारे लिये प्रवेश कर चुके हैं। इसका अर्थ है, कि हमारी आत्मिक अभिव्यक्तियाँ — आशा, विश्वास, प्रेम, आराधना, भूख, लालसा, और इसी प्रकार की अन्य बातें — जो हम यहाँ पृथ्वी पर व्यक्त करते हैं, वे स्वर्गीय पवित्रस्थान में, परदे के भीतर परमेश्वर की उपस्थिति में अनुभव की जाती हैं, जहाँ यीशु हमारे लिये प्रवेश कर चुके हैं! यह अत्यंत आनंददायक है!

अब आइए देखें, कि हम उस उपस्थिति में कैसे प्रवेश करते हैं, जो परदे के पीछे है।

बाहरी आँगन

परमेश्वर की उपस्थिति में हमारी यात्रा बाहरी आँगन से आरंभ होती है। बाहरी आँगन वह प्रक्रिया है, जिसमें हम परमेश्वर की उपस्थिति

में जाने का निर्णय लेते हैं और स्वयं को उनसे मिलने के लिये तैयार करते हैं।

बाहरी आँगन में होमबलि की वेदी होती है — जो समर्पण और आत्मिक बलिदान चढ़ाने का स्थान है। हम अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करते हैं। हम स्तुति और आराधना को आत्मिक बलिदान के रूप में चढ़ाते हैं। हम भलाई के कार्य करते हैं, बाँटते हैं, देते हैं, और इसी प्रकार की अन्य बातें करते हैं, जो उन बलिदानों का भाग हैं जिन्हें हम बाहरी आँगन में अर्पित करते हैं।

रोमियों 12:1
इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

इब्रानियों 13:15,16
15 इसलिये हम उनके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उनके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।
16 भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।

भजन संहिता 95:1,2
1 आओ हम यहोवा के लिये ऊँचे स्वर से गाएँ, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें।
2 हम धन्यवाद करते हुए उनके सम्मुख आएँ, और भजन गाते हुए उनका जयजयकार करें।

भजन संहिता 100:1-5
1 हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा
का जयजयकार करो!
2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो!
जयजयकार के साथ उनके सम्मुख आओ!

[3] निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है!
उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं;
हम उनकी प्रजा, और उनकी चराई की भेड़ें हैं।
[4] उनके फाटकों से धन्यवाद,
और उनके आँगनों में स्तुति करते हुए
प्रवेश करो, उनका धन्यवाद करो, और उनके नाम को धन्य कहो!
[5] क्योंकि यहोवा भला है, उनकी करुणा
सदा के लिये, और उनकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

हमारे पास पीतल की एक हौदी भी है — जो धोने और शुद्ध करने का स्थान है। हम अपने आप को दिन भर की अशुद्धियों से — जीवन की अशुद्धियों से — परमेश्वर के वचन के द्वारा (यूहन्ना 15:3; इफिसियों 5:26) और आत्मा के कार्य के द्वारा (तीतुस 3:5) शुद्ध करते हैं। हम अपने हृदयों को यीशु के लहू के द्वारा बुरे विवेक से शुद्ध करते हैं (इब्रानियों 10:22)। हम अपने आप को अशुद्धियों, ठोकरों, चोटों, डाह, क्रोध, और कड़वाहट से मुक्त करते हैं — हमें शुद्ध किया जाता है।

फिर भी, हम बाहरी आँगन में ही ठहर नहीं सकते। हम में से कुछ लोग केवल शुद्ध होने, आत्मिक बलिदान चढ़ाने तक ही सीमित रह जाने की गलती करते हैं, और फिर वहीं से लौट जाते हैं। हम "बाहरी आँगन के विश्वासी" बने रहते हैं। हम कभी भी उससे आगे नहीं बढ़ते, जो बाहरी आँगन में किया जाता है। मैं आपको बाहरी आँगन से आगे बढ़कर भीतरी आँगन में प्रवेश करने के लिये आमंत्रित करना चाहता हूँ।

भीतरी आँगन (पवित्र स्थान)

भीतरी आँगन में दीपस्तंभ, भेंट की रोटियों की मेज़, और धूप की वेदी होती है।

दीपस्तंभ पर तेल और आग होती है जो प्रकाश उत्पन्न करती

है, जो प्रकाशन और प्रकाशित होने का प्रतीक है। यह वही प्रकाशन और प्रकाशित होना है जिसे पवित्र आत्मा हमारे जीवन में लाते हैं (इफिसियों 1:17), सीधे भी और पवित्रशास्त्र की ज्योति के द्वारा भी (भजन संहिता 119:130)।

भेंट की रोटियाँ हमारे "प्रतिदिन की रोटी" का प्रतीक हैं (मत्ती 6:11)। यह वचन के द्वारा हमारी आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति है (मत्ती 4:4)। यह दिव्य प्रबन्ध की रोटी भी है — हमारी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति (फिलिप्पियों 4:19), चंगाई और छुटकारे की पूर्ति (मत्ती 15:25-28)।

धूप की वेदी प्रार्थना और मध्यस्थता का स्थान है (भजन संहिता 141:2; प्रकाशितवाक्य 8:3,4)। भीतरी आँगन प्रार्थना, विनती, निवेदन और मध्यस्थता का स्थान है। यह आत्मिक युद्ध का स्थान है।

बाहरी आँगन और भीतरी आँगन हमारे एक मसीही के रूप में "कर्तव्यों" का प्रतिनिधित्व करते हैं — वे बातें जो हमें उस स्थान में प्रवेश करने के लिये करनी होती हैं, जहाँ हम वास्तव में पहुँचना चाहते हैं — अर्थात परमपवित्र स्थान।

बाहरी आँगन और भीतरी आँगन प्रार्थना करने, मध्यस्थता के स्थान में बने रहने, परमेश्वर से "हमारी प्रतिदिन की रोटी" माँगने, अपनी आवश्यकताओं के विषय में प्रार्थना करने, और उन आत्मिक बलिदानों को चढ़ाने की ओर संकेत करते हैं जिन्हें चढ़ाने के लिये हमें बुलाया गया है। इसमें एक विश्वासी के रूप में हमारी ज़िम्मेदारियाँ और आत्मिक अनुशासन सम्मिलित हैं। हम में से अधिकांश या तो बाहरी आँगन में या भीतरी आँगन में ही जीवन बिताते हैं। हम बलिदान, दान, स्तुति, प्रार्थना निवेदन, मध्यस्थता, आराधना आदि के स्थान में रहते हैं। हम आत्मा के कार्य का कुछ अंश अनुभव करते हैं (दीपस्तंभ का तेल)। हम परमेश्वर से अपनी आवश्यकताओं के विषय में बात करते

हैं। हम अपनी चिन्ताएँ उन पर डालते हैं, मार्गदर्शन खोजते हैं, उपवास रखते हैं, और अच्छे मसीही जैसे आत्मिक अनुशासनों का पालन करते हैं। फिर भी, ये अभी भी बाहरी और भीतरी आँगन के अनुभव ही हैं। इससे आगे अभी भी, परमपवित्र स्थान है, जहाँ हमें प्रवेश करने और निवास करने का स्वागत किया गया है!

परमपवित्र स्थान (अतिपवित्र स्थान)

परमपवित्र स्थान में वाचा और करुणा है, और ये दोनों केवल परमेश्वर की ओर से आती हैं। वहाँ हम कुछ भी नहीं कर सकते। वहाँ न और कोई बलिदान है, न और धूप, न और मध्यस्थता, न और आत्मिक युद्ध, और न और कुछ करने की आवश्यकता है। हम परमपवित्र स्थान में हैं। परमपवित्र स्थान वह स्थान है जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है। यह पवित्र भूमि है। परमपवित्र स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति की तीव्रता का एक नया स्तर है। हम उनकी सुंदरता को निहारते हैं। हम शांत रहते हैं। हम आदर, विस्मय और पवित्र भय से भर जाते हैं। हम उनकी परम महिमा से आकर्षित हो जाते हैं और उनकी महिमा से आच्छादित हो जाते हैं। हम उनकी उपस्थिति से अभिभूत हो जाते हैं। हमें केवल शांत रहना और जानना है (भजन संहिता 46:10)। उनकी महिमा को देखने और उनकी सुंदरता को निहारने के सिवा और कुछ करने को नहीं है। यह "ठहरने" का स्थान है, जहाँ जब हम उनकी महिमा को देखते रहते हैं, तब परमेश्वर हमें अपनी ही समानता में रूपांतरित करते रहते हैं।

भजन संहिता 95:6
आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें!

हबक्कूक 2:20
परन्तु यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है;
समस्त पृथ्वी उनके सामने शान्त रहे।

भजन संहिता 46:10क
"चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।

भजन संहिता 46:10 में "चुप हो जाओ" का अर्थ है "निष्क्रिय, शांतऔर एकांत" में हो जाना। "जान लो" का अर्थ है "अनुभव के द्वारा जानना," "समझना," "पाना," "देखना।"

यह परमेश्वर के साथ संगति है। संगति का अर्थ है परमेश्वर के साथ होना। संगति का अर्थ है परमेश्वर के चरणों में बैठना। संगति का अर्थ है उनके घर में निवास करना और उनकी सुंदरता को निहारना। यह मरियम के समान है, जो यीशु के चरणों में बैठ गई और परमेश्वर की वाणी सुनती रही। यह उस "एक बात" को चुनना है, जो उत्तम भाग है, और जो छीनी न जाएगी (लूका 10:42)। संगति का अर्थ, परमेश्वर की उपस्थिति में डूबे रहना है। यह परमेश्वर की उपस्थिति को आत्मा में उतार लेना है। परमेश्वर के लिये हमारी भूख और प्यास तृप्त होती है। हम भर रहे हैं और फिर भी और अधिक के लिये भूखे हैं!

आइए हम परमपवित्र स्थान में निवास करें। यही परमेश्वर के साथ निकटता का स्थान है। यही परमेश्वर की उपस्थिति की उच्च तीव्रता का स्थान है। यही परमप्रधान का गुप्त स्थान है।

परमप्रधान के साथ निकटता

परमेश्वर के साथ संगति के स्थान में निवास करना हमारे लिये कितना महत्वपूर्ण है? परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा का अनुभव करने के लिये, हम क्या मूल्य चुकाने को तैयार हैं?

कि मैं उन्हें जान सकूँ

फिलिप्पियों 3:7-11
[7] परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।
[8] वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब

बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ
[9] और उनमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है;
[10] ताकि मैं उसको और उनके मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को, और उनके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, और उनकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ
[11] कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।

फिलिप्पियों 1:21
क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।

प्रेरित पौलुस ने "मसीह को जानने" को अपनी सर्वोच्च अभिलाषा बना लिया था। उन्होंने सब कुछ अलग रख दिया ताकि वह उन्हें जान सकें, उनके पुनरुत्थान की सामर्थ को जान सकें, और यहाँ तक कि उनके लिये दुःखों में भी सहभागी हो सकें। पौलुस के लिये पृथ्वी पर जीवन का अर्थ केवल यीशु ही था!

हम कितनी गहरी लालसा से मसीह को जानना चाहते हैं? क्या हम अपने प्रभु के लिये, उनके साथ अपनी व्यक्तिगत संगति के लिये, और उन्हें जानने के लिये इतने उत्साही हो सकते हैं? क्या हम ऐसे लोग बन सकते हैं, जो उनकी उपस्थिति के लिये जोशीले हों?

निकटता फलवंतता उत्पन्न करती है

यूहन्ना 15:4,5
[4] तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
[5] मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वही बहुत फल लाता है, यह यीशु ने कहा। यही जीवन और सेवकाई में फलवंतता का भेद है। यीशु "बने रहो" शब्द का उपयोग उस संबंध के लिये कर रहे हैं, जो डाली और दाखलता के मुख्य तने के बीच होता है। वे जुड़े हुए हैं। वे एक-दूसरे से संबंधित हैं। दोनों ओर से एक प्रवाह होता है। यह केवल बाहरी संबंध नहीं है। वहाँ कुछ "गहरा" हो रहा है। इसे "सहभागिता," "संगति," या "निकटता" जैसे शब्दों से सबसे अच्छा व्यक्त किया जा सकता है, —ये सभी उस गहन संबंध की ओर संकेत करते हैं, जो एक विश्वासयोग्य व्यक्ति को प्रभु के साथ बनाए रखना चाहिए। परमेश्वर के साथ निकटता, सेवकाई में ऐसी फलवंतता लाएगी, जो केवल वरदानों और अनुभव से उत्पन्न नहीं हो सकती।

सेवकाई आत्मिक वरदानों, प्राकृतिक प्रतिभा, अच्छे प्रबंध, उत्तम संचालन, विपणन कौशल आदि के आधार पर भी हो सकती है। परन्तु यह उस बात की तुलना में कुछ भी नहीं है जब परमेश्वर स्वयं किसी समूह के लोगों के बीच सामर्थी रीति से कार्य करते हैं, या किसी व्यक्ति के जीवन को पूर्ण रूप से भर देते हैं। जो सेवकाई परमेश्वर के साथ निकटता के कारण जन्म लेती है, उससे कहीं अधिक महान और स्थायी फल उत्पन्न होते हैं। मानवीय वाक्पटुता मन को आकर्षित और उत्साहित कर सकती है, परन्तु परमेश्वर की उपस्थिति भीतर के मनुष्य को बदल देती है और स्थायी परिवर्तन लाती है। क्या हम परमेश्वर के साथ गहरी निकटता में प्रवेश करने का प्रयास करेंगे, ताकि वह हमारे द्वारा बहुत फल उत्पन्न करें — ऐसा फल जो बना रहे?

वरदान और अभिषेक बाँटने के द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं, परन्तु परमेश्वर के साथ निकटता ऐसी बात है, जिसे केवल आप ही परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताकर विकसित कर सकते हैं।

गुप्त स्थान

मत्ती 6:6

परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

प्रभु यीशु हमें प्रोत्साहित कर रहे हैं, कि हम अपने गुप्त स्थान में, अपनी प्रार्थना की कोठरी में — जहाँ हम पिता के साथ अकेले होते हैं — उनके साथ समय बिताएँ। वह हमें आश्वासन देते हैं, कि जब हम ऐसा करेंगे और संसार में जाएँगे तो परिवर्तन और कार्य प्रकट होंगे। परमेश्वर खुले में हमारे पक्ष में कार्य करेंगे।

जो कुछ एकांत में होता है, वही सार्वजनिक जीवन को निर्धारित करता है।

गुप्त स्थान, संसार में जाने के लिये तैयारी का स्थान है।

मत्ती 10:27

जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूँ, उन्हें तुम उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उन्हें छतों पर से प्रचार करो

जो परमेश्वर आपसे गुप्त स्थान में धीमी आवाज़ में कहते हैं, वही आपको सार्वजनिक रूप से घोषित करना है।

प्रतिदिन परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करें!

भाई लॉरेन्स, एक मसीही सन्यासी जो सन् 1605 से 1691 के बीच जीवित रहे, ऐसे विश्वासी के प्रसिद्ध उदाहरण हैं, जिन्होंने मठ की रसोई में साधारण कार्य करते हुए भी "परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास" किया। यह लिखा गया है *"कि वे अपने बाहरी कार्यों में परमेश्वर के साथ उससे भी अधिक एकता में थे, जितने कि वे एकांत में भक्ति के*

लिये कार्य छोड़ देने पर होते थे।" उनका मुखमण्डल ही उन्नति देने वाला था; उनमें ऐसी मधुर और शांत भक्ति दिखाई देती थी, जो देखने वालों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती थी। और यह देखा गया, कि रसोई के अत्यधिक व्यस्त समय में भी वे अपनी आत्मिक सजगता और स्वर्गीय मनोभाव को बनाए रखते थे। वे न तो उतावले होते थे और न ही ढीले पड़ते थे, परन्तु हर कार्य को उनके समय पर, समान और अविचल शांति तथा आत्मिक स्थिरता के साथ करते थे। उन्होंने कहा, "कार्य का समय, मेरे लिये प्रार्थना के समय से भिन्न नहीं है; और मेरी रसोई के शोर और भीड़-भाड़ में, जब एक ही समय में कई लोग अलग-अलग बातों के लिये पुकार रहे होते हैं, तब भी मैं परमेश्वर को उतनी ही शांति से अनुभव करता हूँ, जैसे कि मैं धन्य संस्कार के समय घुटनों पर झुका हुआ हूँ" (अंग्रेजी संदर्भ:*परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास: एक पवित्र जीवन का सर्वोत्तम,* पब्लिक डोमेन संस्करण, जॉन हैरिस, ब्रिस्टल, इंग्लैंड, 1994)।

जब हम परमेश्वर के लिये अत्यन्त प्यासे हो जाते हैं, तब वह सामर्थी भेंट के साथ प्रकट होते हैं।

क्या हम उनके और उनकी उपस्थिति के अधिक अनुभव के लिये मूल्य चुकाने को तैयार हैं?

2
उनकी उपस्थिति में

जब हम उनकी उपस्थिति में होते हैं, तो क्या होता है? जब हम उनका अनुसरण करते हैं और उनका दर्शन खोजते हैं, तो क्या होता है?

हम बदल जाते हैं

2 कुरिन्थियों 3:18

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

ऐसा कोई नहीं जो परमेश्वर के साथ अर्थपूर्ण समय बिताए और बिना बदले बाहर आए। परमेश्वर की उपस्थिति हमें बदल देती है।

जब हम उनकी महिमा को निहारते हैं, तो उनके आत्मा के कार्य के द्वारा हम उसी स्वरूप में बदलते जाते हैं। वह हमें *"महिमा से महिमा तक"* ले जाता है। इस संदर्भ में महिमा का अर्थ केवल यह है, कि परमेश्वर कौन हैं और वह क्या करते हैं, इसका प्रकट होना। हम एक स्तर से दूसरे स्तर तक जाते हैं, जहाँ हम बढ़ते हुए उनके स्वरूप और उनके कार्यों को प्रकट करते हैं। उनकी उपस्थिति में हम उनके स्वरूप में बदल दिए जाते हैं!

दोषबोध

उत्पत्ति 3:8

तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उनकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए।

भजन संहिता 51:9-12
9 अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,
और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल।
10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर,
और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
11 मुझे अपने सामने से निकाल न दे,
और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे,
और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल।

कई बार, परमेश्वर की उपस्थिति हमारे जीवन में पाप, अपराधों और उन अन्य बातों के प्रति गहरी दोषसिद्धि उत्पन्न करती है, जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं। जबकि दोषसिद्धि की एक गहरी अनुभूति होती है, यह दण्ड की ऐसी भावना नहीं होती जो हमें परमेश्वर से दूर कर दे। बल्कि, यह हमारे हृदय से पश्चाताप, शुद्धि और उनकी उपस्थिति के लिए और अधिक लालसा की पुकार उत्पन्न करती है। जैसे यशायाह ने पुकारा, *"हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है!"* (यशायाह 6:5)। परमेश्वर शुद्ध करने वाले अंगारे भेजकर उत्तर देते हैं, जो हमारे बीच से पाप को दूर और शुद्ध कर देते हैं। ऐसी गहरी दोषसिद्धि के तुरंत बाद जीवन-परिवर्तनकारी मुलाकातें हो सकती हैं। यशायाह और पतरस दोनों ने गहरी दोषसिद्धि के क्षण के तुरंत बाद, अपने जीवन की बुलाहट प्राप्त की (यशायाह 6:8,9; लूका 5:8,10)।

अक्सर किसी उण्डेल या पुनर्जागरण के प्रारम्भिक समय में, लोगों के भीतर सबसे गहरे परिवर्तन होते हैं। परमेश्वर की महिमा से कम पड़ जाने के कारण, पाप के प्रति गहरा दोषबोध उत्पन्न होता है। पवित्र आत्मा हमारे हृदय की कठोरता को तोड़कर, अशुद्धियों को

जला कर, ठंडक के स्थान पर नई आग भरकर, उन धार्मिक परंपराओं को तोड़कर जो हमें बांधे रखती थीं, हमारे अभिमान को गिराकर, और बहुत कुछ करके हमें बदलते हैं। वह हमारे भीतर परमेश्वर के लिए अधिक प्रेम, उनकी उपस्थिति के लिए उत्कट लालसा, और परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए, बलिदान देने की तत्परता लाते हैं। वह एक दूसरे के प्रति हमारे हृदय को बदल देते हैं और परमेश्वर के लोगों के बीच नई संगति, सहभागिता और एकता को जन्म देते हैं। परमेश्वर हमें अपनी उपस्थिति के लोग बनने के लिए तैयार करते हैं ताकि हम जागृति की अग्नि का अनुभव करें और उन्हें दूसरों तक ले जाएं।

टूटापन

1 कुरिन्थियों 1:29
ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए।

परमेश्वर की उपस्थिति में कुछ और क्षण भी होते हैं, जब हमें यह एहसास होता है, कि हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है, जो हमें उनकी उपस्थिति में खड़े होने के योग्य ठहराए। हम अपने आप को बिल्कुल असहाय अनुभव करते हैं। हम जानते हैं कि हम तो मिट्टी ही हैं और हमारे भीतर ऐसा कुछ भी नहीं है, जिस पर हम उनकी उपस्थिति में घमण्ड कर सकें। ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ हम उनसे भागकर छिप सकें (भजन संहिता 139:7)। यह हमें पूर्ण समर्पण के स्थान पर ले आता है — उसकी इच्छा के प्रति पूर्णतः झुक जाने के लिए। तब हमारे हृदय के उद्देश्य, स्वप्न और इच्छाएँ, उनकी इच्छा के साथ एक सीध में आ जाती हैं।

आनन्द

भजन संहिता 16:11
तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा;
तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है,
तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।

उसकी उपस्थिति में बदले जाने का एक भाग यह भी है, कि हम उस *परिपूर्ण आनन्द* का अनुभव करते हैं, जो उनकी उपस्थिति में मिलता है। परमेश्वर हमें *आनन्द के तेल* से अभिषेक करते हैं (भजन संहिता 45:7; इब्रानियों 1:9)। आनन्द उमंग से भरा होता है, कभी-कभी ऊँचा और प्रबल भी होता है। लोग अचानक नाचने, गाने, हँसने, दौड़ने, जयजयकार करने या अन्य कई तरीकों से उमड़ते हुए आनन्द को प्रकट कर सकते हैं। इन में से किसी को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए, क्योंकि यही उनकी उपस्थिति हमारे भीतर उत्पन्न करती है। मैं समझता हूँ, कि कुछ लोग ऐसे आनन्द के प्रकट होने पर आपत्ति कर सकते हैं। वे मान सकते हैं, कि परमेश्वर की उपस्थिति में जो कुछ भी किया जाए वह कोमल, गंभीर और गरिमामय होना चाहिए। परन्तु ऐसा विचार पवित्रशास्त्र के अनुसार नहीं है। परमेश्वर की उपस्थिति में जयजयकार करना, उत्सव मनाना, ऊँचे स्वर में आनन्द व्यक्त करना, उतना ही स्वीकार्य है जितना कि घुटने टेकना, झुकना, शांत रहना आदि। जब सुलैमान को राजा बनाया गया, और दाऊद, याजक सादोक और भविष्यद्वक्ता नातान उस समारोह में उपस्थित थे, तब बाइबल में लिखा है कि *"...सब लोग उसके पीछे पीछे बाँसुली बजाते और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गए, कि उनकी ध्वनि से पृथ्वी डोल उठी"* (1 राजाओं 1:40)। वह अवश्य ही बहुत ऊँचा स्वर रहा होगा! आनन्द से जयजयकार करना बाइबल के अनुसार है। आनन्द उस उद्धार का भाग है, जो प्रभु की ओर से आता है। भजन संहिता की पुस्तक में *"जयजयकार करो"* वाक्य लगभग 37 बार मिलता है। और मुझे नहीं लगता कि परमेश्वर को यह ध्वनि अप्रिय लगती है, क्योंकि भजन संहिता हमें प्रभु के लिये जयजयकार करने के लिये प्रोत्साहित करती है (भजन संहहिता 95:1; भजन संहिता 98:4)।

आनन्द मुक्ति लाता है। आनन्द सामर्थ लाता है (नहेम्याह 8:10)। यह सम्पूर्णता लाता है (नीतिवचन 17:22)। आनन्द स्वतंत्र करता है।

हमारी शक्ति नवीकृत होती है

यशायाह 40:28-31
28 क्या तुम नहीं जानते?
क्या तुमने नहीं सुना?
यहोवा जो सनातन परमेश्वर
और पृथ्वी भर का सिरजनहार है,
वह न थकता, न श्रमित होता है, उनकी बुद्धि अगम है।
29 वह थके हुए को बल देता है
और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है।
30 तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं,
और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं;
31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं,
वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे,
वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे,
चलेंगे और थकित न होंगे।

जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताते हैं, तो हमारी शक्ति नवीकृत होती है। आत्मिक सामर्थ हमारे भीतरी मनुष्य में डाली जाती है। हम फिर से उड़ सकते हैं, हमारे स्वप्न नये होकर जीवित हो जाते हैं, हमारे हृदय प्रेरित होते हैं, और हमारा उत्साह फिर से प्रज्वलित हो जाता है। हम धैर्य के नये स्तर पाते हैं, जहाँ हम बिना थके दौड़ सकते हैं। हम कठिन परिस्थितियों के बीच भी बिना थके आगे बढ़ सकते हैं, क्योंकि हम उनकी उपस्थिति में रहे हैं।

हम तरोताज़ा किए जाते हैं

प्रेरितों के काम 3:19
इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएँ,

विश्रान्ति का समय प्रभु की उपस्थिति से आता है। यूनानी भाषा में "समय" के लिये शब्द *'काइरोस'* है, जिसका वास्तविक अर्थ है

"उपयुक्त समय" या "ऋतु।" यूनानी में "विश्रान्ति" का अर्थ है, "फिर से श्वास लेना" या "पुनर्जीवन।" "प्रभु की उपस्थिति से" का वास्तविक यूनानी अर्थ है, "प्रभु के मुख से।"

जब हम प्रभु की ओर फिरते हैं और उनका मुख खोजते हैं, तब हम उन पुनर्जीवन और विश्रान्ति के समयों के भागी बनते हैं, जिसे वह हम पर उंडेलते हैं। हम इसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर सकते हैं, या सामूहिक रूप से भी, जब हम मिलकर उन्हें खोजते हैं।

आश्चर्यकर्म होते हैं

व्यवस्थाविवरण 4:37
और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन लिया, और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इसलिये निकाल लाया,

परमेश्वर की उपस्थिति उनके सामर्थी बल का स्थान भी है। जब हम उनकी उपस्थिति में होते हैं, तब हम उनके महान सामर्थ के स्थान में भी होते हैं। जब हम उनकी उपस्थिति में होते हैं, तब हम छुटकारों, आश्चर्यकर्मों, चिन्हों और अद्‌त कामों की अपेक्षा कर सकते हैं।

सदा के लिये सुख हैं

भजन संहिता 16:11
तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा;
तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है,
तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।

जिस स्थान पर हम उनका मुख खोजते हैं और उनकी सुन्दरता को निहारते हैं, वहाँ *आनन्द की भरपूरी* होती है! प्रभु का दाहिना हाथ आदर और सामर्थ का स्थान है (निर्गमन 15:6; व्यवस्थाविवरण 33:2; भजन संहिता 20:6; भजन संहिता 98:1; भजन संहिता 110:1; भजन

संहिता 118:15,16; यशायाह 62:8; मरकुस 16:19)। प्रभु का दाहिना हाथ छुटकारा लाता है, बड़ी विजय देता है और महान सामर्थ प्रकट करता है। परमेश्वर के दाहिने हाथ के सुख उनके सामर्थी कार्य और प्रचुर आशीषें हैं — वे बातें, जो परमेश्वर अपने लोगों के लिये करते हैं और उन्हें देते हैं।

यशायाह 64:1-4

[1] भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए
और पहाड़ तेरे सामने काँप उठे।
[2] जैसे आग झाड़–झँखाड़ को जला देती
या जल को उबालती है,
उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर
कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप से काँप उठें!
[3] जब तू ने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे,
तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से काँप उठे।
[4] क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई
और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उनकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे।

जब परमेश्वर "उतर आते" हैं, तब वह हमारे बीच भयानक और अद्‌त कार्य करते हैं — ऐसी बातें भी जिनकी हमने न तो खोज की होती है और न ही आशा की होती है! ऐसी बातें जिन्हें आंखों ने नहीं देखा, कानों ने नहीं सुना, और जिन्हें मनुष्य ने पहले कभी नहीं सोचा — ऐसी बातें उनकी उपस्थिति में होने लगती हैं।

बुराई पर जय पाई जाती है

यशायाह 19:1

मिस्र के विषय में भारी भविष्यवाणी: देखो,
यहोवा शीघ्र उड़नेवाले बादल पर सवार होकर मिस्र में आ रहा है;
और मिस्र की मूरतें उनके आने से थरथरा उठेंगी, और मिस्रियों का हृदय बैठ जाएगा।

मिस्र की मूरतें वास्तव में मिस्र पर अधिकार रखने वाली दुष्टात्मिक शक्तियों का प्रतीक हैं। ये शक्तियाँ प्रभु की उपस्थिति में ठहर नहीं सकतीं। यह बात स्पष्ट रूप से उस घटना में दिखाई देती है जब प्रभु के सन्दक, जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था, को दागोन की मूर्ति के पास रखा गया, जैसा कि 1 शमूएल 5:2-4 में लिखा है। परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति में दुष्टात्मिक शक्तियाँ गिर पड़ती हैं!

भजन संहिता 9:3
जब मेरे शत्रु पीछे हटते हैं,
तो वे तेरे सामने ठोकर खाकर नष्ट होते हैं।

भजन संहिता 17:2
मेरे मुक़द्दमे का निर्णय तेरे सम्मुख हो!
तेरी आँखें न्याय पर लगी रहें!

परमेश्वर हमारे दैनिक जीवन की परिस्थितियों में हस्तक्षेप कर सकते हैं और जो लोग हमारा विरोध करते हैं, उन्हें पीछे हटने के लिये बाध्य कर सकते हैं। वह हमारी ओर से न्याय प्रकट करते हैं। यह सब प्रभु की उपस्थिति से आता है। जब आप प्रभु की उपस्थिति में और गहराई तक जाते हैं, तो आशा रखें कि बुराई, अत्याचार, उत्पीड़न और अन्याय पीछे हट जाएंगे!

हम परमप्रधान के साथ वास करते हैं

भजन संहिता 91:1,2
[1] जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे,
वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
[2] मैं यहोवा के विषय कहूँगा, "वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है;
वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूँगा।"

भजन संहिता 27:5
क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में

अपने मण्डप में छिपा रखेगा;
अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह मुझे
छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।

भजन संहिता 31:20
तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में
मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा;
तू उनको अपने मण्डप में झगड़े–रगड़े से छिपा रखेगा।

परमप्रधान का गुप्त स्थान उनका तम्बू है, अर्थात् परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति।

जो परमप्रधान की उपस्थिति में वास करता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में निवास करेगा। यह उनके मण्डप में, उनके घर में रहने के समान है। यह उस चट्टान पर खड़े होने के समान है, जहाँ कोई हानि आपको छू नहीं सकती। यही उनकी सुरक्षा की छाया है!

भजन संहिता 91:9-12
9 हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है।
तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
10 इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी,
न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा।
11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त
आज्ञा देगा, कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।
12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में
पत्थर से ठेस लगे।

जब हम गुप्त स्थान में वास करते हैं, तब हम परमप्रधान को अपना निवासस्थान बना लेते हैं। हम परमप्रधान परमेश्वर की उपस्थिति के बीच जीवन बिताते हैं। जब हम परमप्रधान में वास करते हैं, तब हम हर दुष्टात्मिक उत्पीड़न से बहुत ऊपर होते हैं, हर महामारी (रोग और बीमारी) से बहुत ऊपर, और हर बुराई से बहुत ऊपर। हम बड़े

अधिकार के स्थान में होते हैं, जहाँ से हम राज्य करते और शासन करते हैं। हम उनके स्वर्गदूतों के द्वारा सुरक्षित रखे जाते हैं। जब हम पुकारते हैं, वह तुरंत उत्तर देते हैं (भजन संहिता 91:14)।

जब हम उनकी उपस्थिति में होते हैं, तब हम उस गुप्त स्थान में होते हैं, जहाँ परमप्रधान स्वयं हमारा निवासस्थान बन जाते हैं।

हम सामर्थी बनाए जाते हैं

मरकुस 3:14,15

14 तब उसने बारह पुरुषों को नियुक्त किया कि वे उनके साथ–साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें,
15 और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें।

प्रेरितों के काम 4:13

जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।

जब हम उनकी उपस्थिति में होते हैं, तब हम मूल रूप से बदल जाते हैं। हमें पृथ्वी पर उनकी इच्छा पूरी करने के लिये सामर्थ दी जाती है। हम दुष्टात्मिक शक्तियों का सामना करने से नहीं डरते। हम आत्मा में साहसी हो जाते हैं।

उनकी उपस्थिति के उण्डेले जाने की इच्छा

आप उनकी उपस्थिति के उण्डेले जाने की अपनी इच्छा को, कैसे प्रकट करते हैं?

प्यासे रेहना और पीना

यूहन्ना 7:37-39

37 पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।

[38] जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उनके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'।"
[39] उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था।

आत्मा के कार्य और जीवन के जल की नदियों के बहने के संदर्भ में, यीशु ने पहले प्यासे लोगों को पुकारा और उन्हें आकर पीने का निमंत्रण दिया। इसलिए, जीवन के जल की नदियों के बहने और हमारे प्रभु से प्यासा होकर पीने के बीच, एक गहरा संबंध है।

हम उनकी उपस्थिति के बहाव या उण्डेल के लिए, अपनी लालसा इस प्रकार प्रकट करते हैं, कि हम प्यासे हों और आकर पीएं। आइए हम उनके लिए, उनके आत्मा के लिए और अधिक प्यासे हों। आइए हम गहराई से पीएं। "पीना" का अर्थ है, अपने जीवन में उनके और अधिक भाग को, उनकी उपस्थिति को, और वह जो है, उन्हें ग्रहण करना।

प्रतीक्षा करना और भरना

बाइबल हमें बताती है कि हम *"यहोवा की बाट जोहें।"* भजन संहिता की पुस्तक में *'सेलाह'* शब्द 70 बार आता है, जिसका सरल अर्थ है "ठहरना।" सारा संगीत रुक जाता है। यह ठहरने, रुकने और बस *"चुप रहकर जान लेने"* का समय है।

3
उनकी उपस्थिति के प्रत्यक्ष प्रकटीकरण

परमेश्वर के लिए भूख का प्रतिफल, परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति का अनुभव और उनके साथ ऐसा सामना है, जिसके परिणामस्वरूप हमारे जीवन में एक अलौकिक कार्य होता है।

परमेश्वर की एक अदृश्य उपस्थिति है, जो सदा हमारे साथ रहती है। उन्होंने कहा कि वह हमें कभी न छोड़ेंगे और न कभी त्यागेंगे। उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की, कि जहाँ दो या तीन उनके नाम से इकट्ठे होते हैं, वह वहाँ उपस्थित होते हैं। यह परमेश्वर की अदृश्य, अस्पर्शनीय उपस्थिति है। भले ही हम उनकी उपस्थिती को देख नहीं पाते, हम जानते हैं कि वह वहाँ हैं।

लेकिन ऐसे समय भी होते हैं, जब परमेश्वर की उपस्थिति हमारी आत्मिक और शारीरिक दोनों इन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष हो जाती है। वो परमेश्वर जिन्होंने हमारी आत्मा, प्राण और शरीर की रचना की है, वह स्वयं को हम पर ऐसे प्रकट कर सकते हैं, कि हम उनकी उपस्थिति को अपनी आत्मा, प्राण और शरीर में पहचान सकें।

हमें उनकी उपस्थिति के विभिन्न प्रत्यक्ष प्रकट होने वाले रूपों के प्रति जागरूक रहना चाहिए, ताकि जब वह व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से हम पर कार्य करें, तो हम उन्हें पहचान सकें और उचित प्रतिक्रिया दे सकें।

परमेश्वर इस पृथ्वी के क्षेत्र की बातों का उपयोग करके, हमें आत्मिक क्षेत्र के विषय में सिखाते हैं। वह हमारी जानी-पहचानी सांसारिक बातों की छवियों का उपयोग करके, हमें स्वर्गीय बातों के

विषय में सिखाते हैं (यूहन्ना 3:11,12)।

परमेश्वर की उपस्थिति के कुछ प्रत्यक्ष प्रकट होने वाले रूप यहाँ सूचीबद्ध हैं और इनमें से कुछ का विस्तार आगे के अध्यायों में किया गया है। ध्यान रखें कि परमेश्वर दोनों नियमों के बीच नहीं बदले हैं। पुराने नियम के परमेश्वर जैसे थे, वैसे ही नए नियम के परमेश्वर भी हैं (मलाकी 3:6)। वाचाएँ बदली हैं, परन्तु परमेश्वर नहीं बदले हैं। वह आज भी वैसे ही हैं जैसे पहले थे, और सदा वैसा ही रहेंगे। उनका "मुख" नहीं बदला है, अर्थात् उनकी उपस्थिति आज भी वैसी ही है! इसलिए, यद्यपि हम पुराने और नए दोनों नियमों से कई सन्दर्भ देते हैं, ये सब आज के समय में भी संभव हैं। इसलिए आइए हम हमारी संगती में और अपने जीवनों में उनकी उपस्थिति के विभिन्न प्रत्यक्ष प्रकट होने वाले रूपों के लिए, खुले रहें और उनका स्वागत करें।

आग

पवित्रशास्त्र में कई स्थानों पर परमेश्वर की उपस्थिति की तुलना आग से की गई है।

इब्रानियों 12:29
क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है।

निर्गमन 24:17
इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पड़ता था।

प्रेरितों के काम 2:1-4
1 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
2 एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।
3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।

[4] वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

पवित्र आत्मा की उपस्थिति लोगों पर उतरती हुई "आग की जीभों" के रूप में प्रकट हुई।

प्रकाश / ज्योति

भजन संहिता 104:2
जो उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है,
और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है,

1 यूहन्ना 1:5
जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उनमें कुछ भी अन्धकार नहीं।

बादल

पवित्रशास्त्र में लगभग 80 स्थानों पर परमेश्वर की उपस्थिति को बादल के समान आते हुए बताया गया है। यहाँ हम केवल कुछ का उल्लेख करते हैं।

निर्गमन 16:10
और ऐसा हुआ कि जब हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा था कि उन्होंने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया।

निर्गमन 19:9
तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सुन, मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिये कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तब वे लोग सुनें, और सदा तुझ पर विश्वास करें।" और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों का वर्णन किया।

निर्गमन 24:15-18
[15] तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया।

**16 तब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया, और वह बादल उस पर
छ: दिन तक छाया रहा; और सातवें दिन उसने मूसा को बादल के बीच में से
पुकारा।
17 इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के
समान दिखाई पड़ता था।
18 तब मूसा बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और मूसा पर्वत
पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।**

निर्गमन 34:5
**तब यहोवा ने बादल में उतरकर उनके संग वहाँ खड़ा होकर यहोवा नाम का
प्रचार किया।**

2 इतिहास 5:13,14
**13और जब तुरहियाँ बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति
और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियाँ, झाँझ आदि वाद्यों को बजाते हुए
यहोवा की यह स्तुति ऊँचे शब्द से करने लगे,
"वह भला है
और उनकी करुणा सदा की है,"
तब यहोवा के भवन में बादल छा गया,
14और बादल के कारण याजक लोग सेवा–टहल करने को खड़े न रह सके,
क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।**

धुआँ

प्रकाशितवाक्य 15:8
**और परमेश्वर की महिमा और उनकी सामर्थ्य के कारण मन्दिर धुएँ से भर
गया, और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की सातों विपत्तियाँ समाप्त न हुईं तब
तक कोई मन्दिर में न जा सका।**

वर्षा

भजन संहिता 72:6
**वह घास की खूँटी पर बरसनेवाले मेंह,
और भूमि सींचनेवाली झड़ियों के समान होगा।**

होशे 6:3
आओ, हम ज्ञान ढूँढ़ें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें;
क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है;
वह वर्षा के समान हमारे ऊपर आएगा,
वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है।"

वायु

प्रेरितों के काम 2:2
एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।

अन्धकार

2 शमूएल 22:10,12 (भजन संहिता 18:11 भी देखें)
10 वह स्वर्ग को झुकाकर नीचे उतर आया;
और उनके पाँवों तले घोर अंधकार छाया था।
12 उसने अपने चारों ओर के अंधियारे को, मेघों के समूह,
और आकाश की काली घटाओं को अपना मण्डप बनाया।

1 राजाओं 8:12 (2 इतिहास 6:1 भी देखें)
तब सुलैमान कहने लगा,
"यहोवा ने कहा था कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूँगा।

और भी बहुत से सन्दर्भ हैं। परमेश्वर केवल इस सूची तक सीमित नहीं है, और न ही वह केवल उन्हीं बातों तक सीमित है जो बाइबल में लिखी गई हैं। परमेश्वर अपनी उपस्थिति को नए और ताज़े तरीकों से भी प्रकट कर सकते हैं।

प्रभु की उपस्थिति के प्रति मनुष्यों की प्रतिक्रियाएँ

परमेश्वर की उपस्थिति का सामना करने पर, मनुष्यों की कुछ प्रतिक्रियाएँ क्या हो सकती हैं? इनमें से कुछ के बारे में हम पहले चर्चा कर चुके हैं और अब कुछ अतिरिक्त प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

- गहरा दोषबोध।

- अवर्णनीय शांति।
- उमड़ता हुआ आनन्द।
- अलौकिक चंगाइयाँ और आश्चर्यकर्म।
- परमेश्वर की महिमा का भारी प्रभाव।
- मृत समान गिर पड़ना। कई घटनाएँ दर्ज हैं जब दानिय्येल, यहेजकेल, रोमी सैनिक, शाऊल और यूहन्ना जैसे लोग परमेश्वर की उपस्थिति में शक्तिहीन होकर गिर पड़े।
- कांपना। यदि पर्वत यहोवा की उपस्थिति में मोम के समान पिघल जाते हैं और पृथ्वी कांप उठती है (भजन संहिता 97:5; भजन संहिता 114:7), तो क्या लोग भी उनकी उपस्थिति में कांपेंगे नहीं, गिरेंगे नहीं, पिघलेंगे नहीं (यिर्मयाह 5:20-22)?
- शारीरिक अनुभूतियाँ। गर्मी, झनझनाहट, सामर्थ का प्रवाह, आदि।
- गहरी नींद। कभी-कभी परमेश्वर अपनी उपस्थिति के द्वारा लोगों को गहरी नींद में डाल देते हैं, ताकि वह उनके भीतर एक विशेष कार्य कर सकें, जैसे आदम के साथ (उत्पत्ति 2:21) और अब्राहम के साथ (उत्पत्ति 15:12) किया था।
- मतवालेपन जैसा अनुभव। आत्मा का प्रभावशाली कार्य अक्सर "मतवालेपन" जैसे व्यवहार से जुड़ा हुआ पाया जाता है (प्रेरितों के काम 2:13-15; इफिसियों 5:18)।
- दर्शन, समाधि, और विशेष आत्मिक अनुभव।

ऐतिहासिक विवरण: जॉन वेस्ली

जॉन वेस्ली (John Wesley-1703-1791) इंग्लैंड की कलीसिया के एक पासवान थे, और उन्होंने अपनी डायरी में कई प्रकार के प्रकटिकरण के अनुभवों का उल्लेख किया है। यहाँ कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

1739 में लंदन में एक सभा, जिसमें चार्ल्स वेस्ली और जॉर्ज व्हाइटफील्ड भी थे। *"लगभग सुबह तीन बजे, जब हम लगातार प्रार्थना में लगे हुए थे, परमेश्वर की सामर्थ हम पर बड़े प्रभाव के साथ उतरी, यहाँ तक कि बहुत से लोग अत्यधिक आनन्द के कारण पुकार उठे, और बहुत से भूमि पर गिर पड़े। जब हम उनकी महिमा की उपस्थिति के विस्मय और आदर से कुछ संभले, तब हम सब ने एक स्वर से कहा, 'हे परमेश्वर, हम आपकी स्तुति करते हैं; हम स्वीकार करते हैं, कि आप ही प्रभु हैं।'"*

अक्सर ऐसा होता था, कि वेस्ली के संदेश सुनने वाले ऊँचे स्वर से रोने लगते या मृत समान गिर पड़ते थे। ब्रिस्टल के वीवर्स हॉल में प्रचार करते समय, *"एक जवान व्यक्ति अचानक सारे शरीर में जोर से कांपने लगा, और कुछ ही मिनटों में उनके हृदय का क्लेश बढ़ गया, और वह भूमि पर गिर पड़ा।"* एक और अवसर (25 अप्रैल) पर जब वे प्रचार कर रहे थे, *"तुरन्त एक, फिर दूसरा, फिर तीसरा भूमि पर गिर पड़ा; वे चारों ओर ऐसे गिर रहे थे मानो बिजली गिरी हो।"*

उनकी डायरी में विभिन्न अवसरों के ये और भी कुछ विवरण हैं।

- *'मेरी आवाज़ कुछ लोगों की कराहों और दूसरों की ऊँची पुकारों के बीच मुश्किल से सुनाई देती थी, वे ज़ोर-ज़ोर से परमेश्वर को पुकार रहे थे — "वही जो उद्धार करने में समर्थ है।"'*
- *'जैसे ही हम धन्यवाद करके उठे, एक और व्यक्ति चार या पाँच कदम लड़खड़ाया और फिर नीचे गिर पड़ा।'*
- *'छब्बीस व्यक्ति पाप के दोषबोध के अधीन गिर पड़े। कुछ नीचे गिरकर ऐसे ही पड़े रहे और उनमें कोई शक्ति न रही... अन्य बहुत कांपते और थरथराते रहे; कुछ के शरीर के हर भाग में मानो एक प्रकार की अनियंत्रित गति हो रही थी।'*
- मई 1740 में, वेस्ली ने लिखा कि जब वह और उनके भाई साथ

मिलकर गीत गाने ही वाले थे, *"वह ज़ोर से हँस पड़े। मैंने उनसे पूछा कि क्या वह विचलित हो गए हैं; और मैं बहुत क्रोधित होने लगा और तुरंत बाद में, मैं स्वयं भी उतनी ही ज़ोर से हँसने लगा। हम किसी भी प्रकार अपने आप को रोक नहीं सके, यद्यपि ऐसा प्रतीत होता था, मानो हम अपने आप को चीर डालेंगे; और हमें एक और पंक्ति गाए बिना ही घर लौटना पड़ा।"*

ऐतिहासिक विवरण: जोनाथन एडवर्ड्स

जोनाथन एडवर्ड्स (Jonathan Edwards) अमेरिकी इतिहास के एक महान धर्मशास्त्री थे और 1740-1745 के "ग्रेट अवेकनिंग" नामक शक्तिशाली जागृति के समय, परमेश्वर के द्वारा सामर्थी रूप से उपयोग किए गए थे।

"नॉर्थहैम्प्टन में धर्म की जागृति का विवरण, 1740-1742" में उन्होंने लिखा, *"लोगों का चिल्लाना, बेहोश होना, ऐंठन और ऐसी अन्य घटनाएँ देखना बहुत सामान्य बात थी, चाहे वह क्लेश के कारण हों या विस्मय और आनन्द के कारण।"*

18वीं शताब्दी के प्रसिद्ध जागृति-प्रचारक जोनाथन एडवर्ड्स (प्रसिद्ध जागृति संदेश "क्रोधित परमेश्वर के हाथों में पापी" के प्रचारक) ने उल्लेख किया कि सच्ची जागृति की दो प्रमुख विशेषताएँ थीं — गहरा दोषबोध और उसके बाद महान स्तुति और आनन्द। निम्नलिखित वे विशेषताएँ हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं देखा।

"(अ) परमेश्वर की भयानक महिमा, महानता और पवित्रता का असाधारण बोध, जो कभी-कभी आत्मा और शरीर को अभिभूत कर देता था; परमेश्वर की सब कुछ भेदने वाली और सब कुछ देखने वाली दृष्टि का ऐसा अनुभव, कि कभी-कभी शारीरिक शक्ति समाप्त हो जाती थी; और परमेश्वर के क्रोध की अनन्त भयानकता तथा उस क्रोध के अधीन पापियों की अवर्णनीय दुर्दशा का गहरा अनुभव।

"(आ) विशेष रूप से इन दो बातों की लालसा — और अधिक नम्रता और आराधना में पूर्णता। उस व्यक्ति को परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की स्तुति गाने में बड़ा आनन्द आता था और वह चाहता था, कि यह वर्तमान जीवन मानो परमेश्वर के लिए निरंतर स्तुति का एक गीत बन जाए..."

जब हम परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति के आगे समर्पित होते हैं, उसके लिए दिशानिर्देश

- जिस परमेश्वर ने हमारी भावनाओं की रचना की है, उन्हें अधिकार है, कि वह हमारी भावनाओं को असाधारण तरीकों से स्पर्श करें। जब वह ऐसा करें, तो हम उनके प्रति समर्पित रहें।
- जिस परमेश्वर ने हमारी शारीरिक इन्द्रियों की रचना की है, उन्हें अधिकार है, कि वह उन्हें असाधारण तरीकों से स्पर्श करें। जब वह ऐसा करें, तो हम उनके प्रति झुकें।
- जब परमेश्वर हमारी भावनाओं या शारीरिक इन्द्रियों को असाधारण रूप से स्पर्श करते हैं, तो उनका एक उद्देश्य होता है। वह केवल मनोरंजन के लिए ऐसा नहीं करते। कई बार वह स्वयं को प्रकट करने, चंगा करने, हमारे हृदयों को बदलने, आदि के लिए ऐसा करते हैं। उस उद्देश्य की पूर्ति, उस अनुभव से <u>अधिक</u> महत्वपूर्ण है।
- हमारा लक्ष्य <u>उन्हें</u> खोजना है, न कि कोई असाधारण अनुभव या प्रकटिकरण को। फिर भी, <u>यदि</u> परमेश्वर हमें किसी असाधारण तरीके से स्पर्श करें, तो हमें अपने अभिमान और "गरिमामय" आराधना की शैली को अलग रखकर, उनके कार्य के प्रति झुकना चाहिए।
- सब कुछ परमेश्वर के प्रति समर्पण में किया जाना चाहिए, न कि व्यक्तिगत ध्यान या पहचान पाने के लिए।

- सब कुछ आदर और इस समझ के साथ किया जाना चाहिए कि परमेश्वर कौन हैं।
- सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाना चाहिए।
- आत्म-संयम का अभ्यास करें।

यद्यपि यह सत्य है कि कुछ अतिरेक हुए हैं, शारीरिक अभिव्यक्तियाँ हुए हैं और स्वयं से उत्पन्न भावनात्मक बढ़ा-चढ़ाकर बातें भी हुई हैं, फिर भी हम वास्तविक कार्यों का इन्कार नहीं कर सकते!

कई धर्मशास्त्रियों और अन्य लोगों ने उनकी प्रत्यक्ष उपस्थिति के कारण होने वाली असामान्य मानवीय प्रतिक्रियाओं पर प्रश्न उठाए हैं। बहुतों ने अपने विरोध को खुलकर व्यक्त किया है। असीमित परमेश्वर को हमारी सीमित समझ और तर्क में समझना कठिन है। स्वाभाविक मनुष्य आत्मा की बातों को नहीं समझ सकता (1 कुरिन्थियों 2:14)

4
उनकी उपस्थिति की अग्नि

परमेश्वर की उपस्थिति की तुलना आग से की गई है और आग जो कार्य करती है उससे भी।

इब्रानियों 12:29
क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है।

निर्गमन 3:2-4
2 और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उसने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती।
3 तब मूसा ने कहा, "मैं उधर जाकर इस बड़े आश्चर्य को देखूँगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।"
4 जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, "हे मूसा, हे मूसा!" मूसा ने कहा, "क्या आज्ञा।"

निर्गमन 13:21,22
21 और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिये मेघ के खम्भे में, और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्भे में होकर उनके आगे आगे चला करता था, जिससे वे रात और दिन दोनों में चल सकें।
22 उसने न तो बादल के खम्भे को दिन में और न आग के खम्भे को रात में लोगों के आगे से हटाया।

निर्गमन 19:18
और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धूएँ से भर गया; और उनका धूआँ भट्टे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था।

निर्गमन 24:17
इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पड़ता था।

प्रेरितों के काम 2:1-4
1 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
2 एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।
3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।
4 वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

हम उनकी उपस्थिति की आग को अनेक तरीकों से पहचानते हैं। कभी-कभी यह एक आत्मिक **बोध** होता है, जिसमें हम जानते हैं, कि परमेश्वर हमारे बीच भस्म करने वाली आग के समान उपस्थित हैं, और वह अपनी उपस्थिति की आग के साथ हम पर कार्य कर रहे हैं, ताकि वह वही करें जो उनकी उपस्थिती की आग करती है। कुच्छ अवसरों में लोगों ने आग को **देखा** है — या तो पिन्तेकुस्त के दिन की तरह आग की जीभों के रूप में, या मूसा द्वारा देखी गई जलती हुई झाड़ी की तरह बड़ी ज्वालाओं के रूप में। यह परमेश्वर का, अपनी उपस्थिति की आग को, हमारी दृष्टि के लिये प्रत्यक्ष करना है। कभी-कभी हम गर्मी या ताप का **अनुभव** करते हैं — कभी कोमल, कभी बहुत तीव्र, यहाँ तक कि असहनीय प्रतीत होने वाला। यह परमेश्वर का अपनी उपस्थिति की आग को हमारी अनुभूति के लिये प्रत्यक्ष करना है।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, शुद्ध करती है

गिनती 31:23अ
जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा;

दानिय्येल 12:10अ
बहुत से लोग तो अपने अपने को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएँगे...

मत्ती 3:10-12
10 अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जो–जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।
11 "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उनकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
12 उनका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।"

यशायाह 6:1-9
1 जिस वर्ष उज्जियाह राजा मरा, मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उनके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया।
2 उससे ऊँचे पर सारा‍प दिखाई दिए; उनके छ: छ: पंख थे; दो पंखों से वे अपने मुँह को ढाँपे थे और दो से अपने पाँवों को, और दो से उड़ रहे थे।
3 वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे थे :
"सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है;
सारी पृथ्वी उनके तेज से भरपूर है।"
4 और पुकारनेवाले के शब्द से डेवढ़ियों की नींवें डोल उठीं, और भवन धूएँ से भर गया।
5 तब मैं ने कहा,
"हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ;
क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ;
और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ,
क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है!"
6 तब एक सारा‍प हाथ में अँगारा लिये हुए, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया।
7 उसने उससे मेरे मुँह को छूकर कहा,
"देख, इसने तेरे होंठों को छू लिया है,
इसलिये तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए।"

[8] तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना,
"मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?"
तब मैं ने कहा, "मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।"
[9] उसने कहा, "जा, और इन लोगों से कह,
'सुनते ही रहो, परन्तु न समझो, देखते ही रहो, परन्तु न बूझो।'

उनकी उपस्थिति की अग्नि, शुद्धि और पवित्रीकरण लाती है। परमेश्वर अपनी उपस्थिति की अग्नि से हमें बपतिस्मा देते हैं, जो भूसे, यानि शरीर के कामों को जला डालती है। एक ही क्षण में, जो कुछ परमेश्वर का नहीं है, वह उनकी उपस्थिति की अग्नि में जलकर भस्म हो सकता है। अशुद्ध अभिलाषाएँ, शारीरिक जीवन-शैली के ढंग, बन्धन और लतें—उनकी उपस्थिति की अग्नि के हम पर गिरते ही, तुरंत जलकर नष्ट और दूर हो जाते हैं। अक्सर, इससे पहले या इसके साथ गहरी दोषसिद्धि और आत्मिक व्याकुलता होती है, जैसा कि यशायाह ने अनुभव किया। *"हाय मुझ पर! मैं नाश हुआ!"* का अत्यधिक भाव होता है। और तब, उनकी वेदी के अंगारे हमारे जीवन पर गिरते हैं और उनकी पवित्र अग्नि हर अशुद्ध बात को भस्म कर देती है।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, फिर से प्रज्वलित करती है

परमेश्वर और लोगों के प्रति हमारे प्रेम का पुनः प्रज्वलन

मत्ती 24:12
अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा

प्रकाशितवाक्य 3:14-16
[14]"लौदीकिया की कलीसिया के दूत को यह लिख: "जो आमीन और विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है, वह यह कहता है कि
[15] मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता।
[16] इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ।

परमेश्वर चाहते हैं, कि हम उनके प्रति अपने प्रेम में धधकते हुए गरम रहें। जब परमेश्वर की उपस्थिति हम पर आती है, तब हम में से बहुत से जो गुनगुने हैं, फिर से प्रज्वलित हो जाते हैं। परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम, जो ठंडा होता हुआ प्रतीत होता है, फिर से जीवित हो जाता है और प्रबल रूप से जलने लगता है। किसी को हमें उकसाने, प्रेरित करने या बाध्य करने की आवश्यकता नहीं रहती। उनकी उपस्थिति की अग्नि ने हमारे पहले प्रेम को फिर से प्रज्वलित कर दिया है! हम उनके लिए जल रहे हैं!

वरदानों, सेवकाइयों, आवरणों और अभिषेक का पुनः प्रज्वलन

1 थिस्सलुनीकियों 5:19
आत्मा को न बुझाओ।

2 तीमुथियुस 1:6
इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्ज्वलित कर दे।

कभी-कभी, जिन लोगों को परमेश्वर ने बुलाया और वरदान दिए हैं, वे विभिन्न कारणों से अपने वरदानों और बुलाहट को नकारते हैं। कुछ मामलों में यह आत्मा को जानबूझकर बुझाना होता है, और अन्य मामलों में यह इस संसार की चिन्ताओं, भटकावों आदि के कारण हो सकता है। लेकिन परमेश्वर की उपस्थिति में, ये बातें फिर से प्रज्वलित हो जाती हैं। उनकी उपस्थिति की अग्नि इन्हें जीवित कर देती है, और वे अपने आप को एक बार फिर उन वरदानों, बुलाहट और अभिषेक में प्रवाहित पाते हैं, जो कभी उनके जीवन पर थे। कितनी बड़ी आनन्द और आशीष की बात है कि ये बहुतों के लिए आशीष का कारण बनते हैं!

प्रभु के लिए उत्साह का पुनः प्रज्वलन

रोमियों 12:11
प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।

समय के साथ, मसीही कर्तव्यों की कठोरता के कारण, या कभी-कभी, सेवा में अत्यधिक कार्यभार के कारण, हम प्रभु के लिए अपना उत्साह खोने लगते हैं। जब हम उनकी उपस्थिति में समय बिताते हैं, तो प्रभु के लिए हमारा उत्साह फिर से प्रज्वलित हो जाता है। हम आत्मा में प्रज्वलित और धधकते हुए हो जाते हैं। फिर *"प्रयत्न करने में आलसी"* रहने की बात नहीं रहती। जो कुछ हम प्रभु के लिए करते हैं, उनमें नया जोश और उत्साह आ जाता है।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, उनकी स्वीकृति का चिन्ह है

1 इतिहास 21:26
तब दाऊद ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ाकर यहोवा से प्रार्थना की, और उसने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिराकर उनकी सुन ली।

2 इतिहास 7:1
जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों तथा अन्य बलियों को भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर गया।

जब परमेश्वर अपनी उपस्थिति की अग्नि के साथ हमसे भेंट करते हैं, तो यह इस बात का चिन्ह है, कि वे उन आत्मिक बलिदानों को स्वीकार कर रहे हैं, जिन्हें हम चढ़ा रहे हैं। यह एक स्पष्ट चिन्ह हैस, कि हमारी प्रार्थनाएँ सुनी गई हैं और हमारे बलिदान उन्हें भाए हैं। यद्यपि हम उनकी उपस्थिति के दृश्य प्रकटीकरणों पर निर्भर नहीं रहते, फिर भी जब वह इस प्रकार अपने आप को प्रकट करते हैं, तो हम उनका स्वागत करते हैं।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, अलौकिक सामर्थ्य का संचार लाती है

प्रेरितों के काम 2:1-4

1 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
2 एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।
3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।
4 वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं और उनकी उपस्थिति की अग्नि हम पर चल रही होती है, तब आत्मिक सामर्थ्य का संचार होता है। परमेश्वर की शक्ति, वे आत्मिक वरदान जो पहले हमारे पास नहीं थे, वे आवरण और अभिषेक जिन्हें हम पहले नहीं धारण करते थे, हम पर उण्डेल दिए जाते हैं (2 राजाओं 2:11-13)! पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का एक नया बपतिस्मा प्राप्त होता है।

कभी-कभी, जब हम लोगों की सेवा करते हैं, तो सेवा करने वाला या जिनकी सेवा की जा रही है, वे गर्मी या ऊष्मा का अनुभव करते हैं — जो उनकी उपस्थिति की अग्नि का एक प्रत्यक्ष प्रकटीकरण है। उदाहरण के लिए, सेवा करने वाला अपने दाहिने हाथ में गर्मी महसूस कर सकता है। यह परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य का एक स्पष्ट चिन्ह है, और उस व्यक्ति को जानना चाहिए कि प्रभु क्या करना चाहते हैं। प्रायः ऐसा हो सकता है कि सेवा करने वाले को लोगों पर हाथ रखकर, उनकी जीवन में उनकी उपस्थिति की अग्नि का संचार करना चाहिए। इसी प्रकार, सेवा प्राप्त करने वाले लोग हल्की ऊष्मा या तीव्र गर्मी अनुभव कर सकते हैं। उनकी उपस्थिति की अग्नि का यह प्रत्यक्ष प्रकटीकरण इस बात का संकेत हो सकता है, कि परमेश्वर चंगाई का कार्य कर रहे हैं और उस व्यक्ति को विश्वास में आगे बढ़कर ग्रहण

करना चाहिए, और वह कार्य आरम्भ करना चाहिए, जो वह पहले नहीं कर सकता था। या यह भी हो सकता है, कि परमेश्वर उस व्यक्ति के जीवन में कुछ प्रदान कर रहे हों। कभी-कभी, यह गर्मी इतनी तीव्र हो सकती है, कि व्यक्ति ऐसे चिल्लाने या रोने लगे मानो वह आग में हो। उस व्यक्ति पर परमेश्वर की उपस्थिति की अग्नि है, जो भूसे — यानि शारीरिक और अनावश्यक बातों — को जला रही है।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, परिपक्व बनाती है

मरकुस 9:49,50

49 क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा।
50 नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उन्हें किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।

उनकी उपस्थिति की अग्नि संस्कार उत्पन्न करती है — विकास और परिपक्वता। जिस प्रकार शरीर की सारी बातें जलकर भस्म हो जाती हैं, उसी प्रकार आत्मिक मेल, दृष्टिकोण में परिवर्तन, हमारे हृदय की दिशा में बदलाव, आंखों का खुलना, और उनकी इच्छा और उद्देश्य के प्रति समर्पित होने की तत्परता भी आते हैं। संस्कार आते हैं! उनकी उपस्थिति की अग्नि में हमें परिपक्वता के एक नए स्तर में ले जाया जाता है।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, बुराई पर जय पाती है

प्रकाशितवाक्य 20:7-9

7 जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा।
8 वह उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात् गोग और मागोग को जिनकी गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमाकर लड़ाई के लिये इकट्ठा करने को निकलेगा।
9 वे सारी पृथ्वी पर फैल कर पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी; और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी।

शत्रु उनकी उपस्थिति की अग्नि के सामने ठहर नहीं सकता! अन्धकार के काम और दुष्टात्माओं की शक्तियाँ परमेश्वर की अग्नि से भाग जाती हैं! जब उनकी उपस्थिति की अग्नि हम पर होती है, तब हम दुष्टात्माओं की शक्तियों पर महान छुटकारे और सामर्थी विजय की आशा कर सकते हैं।

उनकी उपस्थिति की अग्नि, सुरक्षा देती है

जकर्याह 2:5

यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उनके चारों ओर आग की सी शहरपनाह ठहरूँगा, और उनके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूँगा।'"

परमेश्वर के उपस्थिति की अग्नि, उनके लोगों को अलौकिक सुरक्षा से घेर लेती है। यह स्वयं परमेश्वर का अपने लोगों के चारों ओर डेरा डालना है, ताकि कोई उत्पीड़क भीतर प्रवेश न कर सके (जकर्याह 9:8)।

5
उनकी उपस्थिति की ज्योति

परमेश्वर की उपस्थिति की तुलना ज्योति से की गई है!

परमेश्वर ज्योति है

1 यूहन्ना 1:5
जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उनमें कुछ भी अन्धकार नहीं।

1 तीमुथियुस 6:16
और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उन्हें किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।

याकूब 1:17
क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।

यूहन्ना 8:12
यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"

जब हम उनकी उपस्थिति को अपने सम्पूर्ण अस्तित्व में भरने के लिए आमंत्रित करते हैं, तब हम उनकी ज्योति से भर जाते हैं!

उनकी उपस्थिति की ज्योति, पाप का खुलासा करता है

1 यूहन्ना 1:5,6
[5] जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर

ज्योति है और उनमें कुछ भी अन्धकार नहीं।
[6] यदि हम कहें कि उनके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते;

मत्ती 10:26
"इसलिये मनुष्यों से मत डरना; क्योंकि कुछ ढँका नहीं जो खोला न जाएगा, और न कुछ छिपा है जो जाना न जाएगा।

दानिय्येल 2:22b
... वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उनके संग सदा प्रकाश बना रहता है।

उनकी उपस्थिति के प्रकाश में, हमें गहरी जागरूकता होती है, कि हम इस ब्रह्माण्ड के परमेश्वर के सामने निर्वस्त्र और नग्न खड़े हैं। हम कुछ भी छिपा नहीं सकते। हमारे गुप्त पाप, हमारी भीतरी अभिलाषाएँ जो अधर्मी हैं, और हमारे हृदय के विचार — सब प्रकट हो जाते हैं। जिन बातों को हमने अनदेखा किया — जिन्हें हमने "ठीक है" कहकर टाल दिया — उन सब के लिए हम उत्तरदायी ठहरते हैं। उनकी उपस्थिति की खोजती हुई ज्योति, भीतर तक भर जाती है और परमेश्वर हमें बताने लगते हैं, कि ये बातें स्वीकार्य नहीं हैं।

उनकी उपस्थिति की ज्योति, जागरूक करता है

प्रकाशन (Illumination)

यहन्ना 1:4
उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

उनकी उपस्थिति का प्रकाश अलौकिक प्रबोधन लाता है। यह वह प्रकाशन है, जो हमारे हृदयों में तब होता है, जब हम उनकी उपस्थिति की ज्योति में होते हैं। समझ हमारे जीवन में आती है। बातें स्पष्ट हो जाती हैं। भ्रम दूर हो जाते हैं। अचानक, वह मार्ग जिस पर

परमेश्वर हमें चला रहे थे, और वह दिशा जिसके विषय में वह हमसे बोल रहे थे — सब कुछ "समझ में" आने लगता है।

प्रगटीकरण (Revelation)

दानिय्येल 2:22
वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है;
वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है,
और उनके संग सदा प्रकाश बना रहता है।

नीतिवचन 20:27
ममनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है;
वह मन की सब बातों की खोज करता है।

भजन संहिता 18:28
तू ही मेरे दीपक को जलाता है;
मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अन्धियारे को उजियाला कर देता है।

उनकी उपस्थिति के प्रकाश में प्रगटीकरण होते हैं। छिपी हुई बातें, परमेश्वर के गुप्त उद्देश्य, और वह कार्य जो परमेश्वर अदृश्य संसार में कर रहे हैं, आदि, हमारे हृदयों में उमड़ पड़ते हैं।

दिशा

यशायाह 58:10,11
10 उदारता से भूखे की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।
11 यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा,
और अकाल के समय तुझे तृप्त
और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा;
और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।

उनकी उपस्थिति के प्रकाश में हमारा अन्धकार दोपहर के समान, ज्योतिर्मय हो जाता है। परमेश्वर की ओर से जिस मार्गदर्शन और दिशा की हम प्रतीक्षा कर रहे थे, वह हमारे जीवन में प्रकट हो जाती है। हम उनके मार्गदर्शन को थाम लेते हैं। जब हम उनके निर्देशों का पालन करते हैं, तो हम सींची हुई बारी के समान हो जाते हैं!

उनकी उपस्थिति की ज्योति, अन्धकार को दूर करती है

यहन्ना 1:4,5

4 उनमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।
5 ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उन्हें ग्रहण न किया।

जब उनकी ज्योति चमकती है, तो अन्धकार भाग जाता है। उनकी उपस्थिति की ज्योति में, जो कुछ अन्धकार का है, वह नष्ट हो जाता है। हमारे जीवन स्वतंत्र किए जाते हैं। यीशु महिमित होते हैं!

उनकी उपस्थिति की ज्योति, दिव्य सामर्थ्य प्रकट करती है

हबक्कूक 3:1-4

1 शिग्योनीत की रीति पर हबक्कूक नबी की प्रार्थना।
2 हे यहोवा, मैं तेरी कीर्ति सुनकर डर गया।
हे यहोवा, वर्तमान युग में अपने काम को पूरा कर;
इसी युग में तू उसको प्रगट कर; क्रोध करते हुए भी दया करना स्मरण कर।
3 ईश्वर तेमान से आया,
पवित्र ईश्वर परान पर्वत से आ रहा है।
उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है, और पृथ्वी उनकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है।
4 उनकी ज्योति सूर्य के तुल्य थी,
उनके हाथ से किरणें निकल रही थीं;
और इनमें उनका सामर्थ्य छिपा हुआ था।

परमेश्वर की सामर्थ्य, उनकी उपस्थिति के उस प्रकाश में छिपी होती है, जिसे वह हमारे बीच प्रकट करते हैं। जब आप उनकी उपस्थिति की ज्योति में होते हैं, तो अपेक्षा करें कि परमेश्वर की सामर्थ्य

आपको उन क्षेत्रों में, जो पहले अन्धकार से घिरे हुए थे, सफलता और सफलता का मार्ग देगी!

परिवर्तन लाता है

प्रेरितों के काम 9:3-5

[3] परन्तु चलते–चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उनके चारों ओर ज्योति चमकी,
[4] और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"
[5] उसने पूछा, "हे प्रभु, तू कौन है?" उसने कहा, "मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।

जब लोग उनकी उपस्थिति की ज्योति का सामना करते हैं, तो उनके जीवन सामर्थी रूप से बदल जाते हैं। अक्सर, तत्काल परिवर्तन होता है। उनकी उपस्थिति की ज्योति के साथ आने वाली परमेश्वर की सामर्थ्य, उन्हें एक ही क्षण में पूर्ण रूप से परिवर्तित कर देती है!

चंगाई और जय लाता है

मलाकी 4:2,3

[2] परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उनकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों के समान कूदोगे और फाँदोगे।
[3] तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पाँवों के नीचे की राख बन जाएँगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

धर्म का सूर्य, चंगाई के साथ उदय होता है! जब परमेश्वर की उपस्थिति का प्रकाश हमारे जीवन में चमकता है, तो हम अपने बीच चंगाई के प्रकटीकरण की आशा कर सकते हैं।

उनकी उपस्थिति की ज्योति, उनकी महिमा को प्रकट करती है

यशायाह 60:1-5

[1] उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।

[2] देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उनका तेज तुझ पर प्रगट होगा।
[3] जाति जाति तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे।
[4] अपनी आँखें चारों ओर उठाकर देख; वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं; तेरे पुत्र दूर से आ रहे हैं, और तेरी पुत्रियाँ हाथों–हाथ पहुँचाई जा रही हैं।
[5] तब तू इसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय थरथराएगा और आनन्द से भर जाएगा; क्योंकि समुद्र का सारा धन और जाति जाति की धन–सम्पत्ति तुझ को मिलेगी।

जब हम उनकी उपस्थिति के प्रकाश से परिपूर्ण हो जाते हैं, तब हम उनकी महिमा को धारण करते हैं। उनकी उपस्थिति का प्रकाश हमें तेजस्वी बना देता है, जिससे उनकी महिमा हम पर दिखाई देती है। उद्धार न पाए हुए लोग, उस प्रकाश को देखेंगे और उनकी ओर आएंगे। यह धन-सम्पत्ति और अन्य बहुत सी बातों (यशायाह 60 पढ़ें) को हमारे जीवन में प्रकट करेगा।

निर्गमन 34:28-30
[28] मूसा वहाँ यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक न तो उसने रोटी खाई और न पानी पिया। और उसने उन तख़्तियों पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएँ लिख दीं।
[29] जब मूसा साक्षी की दोनों तख़्तियाँ हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतर रहा था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उनके चेहरे से किरणें* निकल रही थीं, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उनके चेहरे से किरणें निकल रही हैं।
[30] जब हारून और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा कि उनके चेहरे से किरणें निकल रही हैं, तब वे उनके पास जाने से डर गए।

6
उनकी उपस्थिति की वर्षा

बाइबल में यह देखना अद्‌त है कि परमेश्वर अपने आप को हमारे ऊपर वर्षा के समान उतरने वाला बताते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति जब हम पर प्रकट होती है, तो वह उस वर्षा के समान है, जो पृथ्वी पर गिरती है, ताज़गी लाती है और पृथ्वी को फलवंत बनाती है।

भजन संहिता 72:6
वह घास की खूँटी पर बरसनेवाले मेंह,
और भूमि सींचनेवाली झड़ियों के समान होगा।

होशे 6:3
आओ, हम ज्ञान ढूँढ़ें,
वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें;
क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है;
वह वर्षा के समान हमारे ऊपर आएगा,
वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है।"

यदि हम उनका अनुसरण करें, तो वह निश्चय ही वर्षा के समान हमारे पास आएंगे। द मैसेज बाइबल इसे इस प्रकार प्रस्तुत करती है: *"जैसे भोर का प्रकाश निश्चित रूप से उदय होता है, वैसे ही उसका प्रतिदिन आगमन निश्चित है। वह वर्षा के समान आता है, जैसे वसंत की वर्षा भूमि को ताज़गी देती है।"* वह बोवाई के समय की वर्षा के समान आते हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए, कि हमारा किया हुआ परिश्रम व्यर्थ न जाए। वह कटनी से ठीक पहले होने वाली वर्षा के समान आते हैं, ताकि फल पक जाए और हमारे श्रम का उत्तम प्रतिफल हमें प्राप्त हो।

जकर्याह 10:1
बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा माँगो,
यहोवा से जो बिजली चमकाता है,
और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा।

परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि हम वर्षा के समय प्रभु से वर्षा मांगें। जब अन्य स्थानों पर वर्षा हो रही हो, तब अपने जीवन में, अपने क्षेत्र में वर्षा के लिए उनसे मांगें। हम आत्मिक उण्डेलाव के समय में हैं, क्योंकि उन्होंने कहा है, कि अन्तिम दिनों में वह अपनी आत्मा उण्डेलेंगे। हम संसार के अनेक स्थानों पर आत्मा का उण्डेला जाना देख रहे हैं। यह अंतिम वर्षा का समय है। अब समय है कि हम अपने जीवनों और अपने नगरों, कस्बों और गांवों पर वर्षा के लिए प्रभु से मांगें। परमेश्वर का वचन हमें आश्वासन देता है, कि प्रभु बादल बनाएंगे और वर्षा की बौछारें देंगे। वह अपनी उपस्थिति को वर्षा के समान हम पर उण्डेलेंगे!

उनकी उपस्थिति की वर्षा, ताज़गी लाती है

प्रेरितों के काम 3:19
इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएँ,

उनकी उपस्थिति की वर्षा हमारे जीवन में *ताज़गी के समय* लाती है। जो आत्मिक और भावनात्मक रूप से सूखे हैं, वे उनकी उपस्थिति में ताज़े किए जाते हैं। वे अपने आप को नया, सामर्थी और आगे की दौड़ में बढ़ने के लिए तैयार अनुभव करते हैं। परमेश्वर के उपस्थिति की ताज़गी, हर बात में नयापन लाती है — सब कुछ नया और ताज़ा लगता है। परमेश्वर के वचन पर मनन करना, प्रार्थना करना, परमेश्वर को खोजना, आराधना करना, संगति रखना, दूसरों तक पहुंचना — सब कुछ नया, ताज़ा और उत्साहपूर्ण हो जाता है। जीवित होना ही आनन्दमय हो जाता है!

उनकी उपस्थिति की वर्षा, फलवन्तता लाती है

जब परमेश्वर अपनी उपस्थिति की वर्षा उण्डेलते हैं, तो वह फलवन्तता उत्पन्न करते हैं। केवल परमेश्वर ही, मरुभूमि को, आनन्दित और गुलाब के समान खिलने वाला बना सकते हैं। केवल परमेश्वर ही, सूखे और प्यासे देश को, सींची हुई बारी बना सकते हैं। उनकी उपस्थिति की वर्षा हमारे बीच यह करती है। जो कभी बंजर था, वह फलवन्त हो जाता है। लोग अपने आत्मिक जीवन में, सम्बन्धों में, कार्यस्थल पर, और जीवन के हर क्षेत्र में, बढ़ती हुई फलवन्तता देखने लगते हैं।

7
उनकी उपस्थिति की महिमा

परमेश्वर की महिमा, उनकी प्रकट उपस्थिति है — उनकी उपस्थिति जो हमारे लिए स्पर्शनीय बना दी गई है।

कबोद

जब परमेश्वर की भारी महिमामयी उपस्थिति आती है, तो उसे *'कबोद (Kabod)'* कहा जाता है। *'कबोद'* का अर्थ है भार, वैभव, या बहुतायत। जब यह घनी, भारी, भारयुक्त *'कबोद'* आती है, तो कौन अपने पैरों पर खड़ा रह सकता है?

1 राजाओं 8:10,11
10 जब याजक पवित्रस्थान से बाहर निकले, तब यहोवा के भवन में बादल भर गया,
11 और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था।

'कबोद' परमेश्वर की वह महिमामयी उपस्थिति है, जिसे आप अनुभव कर सकते हैं। उनकी महिमा का भार — यह परमेश्वर की महिमा है जो भारी, गहन और घनी उपस्थिति के रूप में प्रकट होती है, जिसे महसूस किया जा सकता है।

शेकिनाह

यद्यपि यह शब्द बाइबल में नहीं पाया जाता, परन्तु बाइबिलीय इब्रानी में इसका वास्तविक अर्थ है "ठहरना, वास करना या निवास करना।"

निम्नलिखित टिप्पणियाँ "जकर्याह और यहूदी नवीनीकरण (Zechariah and Jewish Renewal)" लेखक: फ्रेड पी. मिलर (Fred P. Miller) से अनुकूलित की गई हैं।

"शेकिनाह (Shekinah)" शब्द बाइबल में पाए जाने वाले उन क्रियात्मक रूपों से बनाया गया है, जो किसी स्थान पर परमेश्वर की "उपस्थिति" का वर्णन करते हैं। "शेकिनाह" शब्द स्वयं बाइबल के मूल पाठ में नहीं है, परन्तु इसकी अवधारणा स्पष्ट रूप से विद्यमान है। यह इब्रानी शब्द "शाकन (shakan)" से निकला है, और "शेकिनाह" को संज्ञा रूप में उन क्रियाओं से गढ़ा गया है, जो परमेश्वर की भौतिक प्रकट उपस्थिति के "ठहरने, वास करने या निवास करने" का वर्णन करती हैं, जैसा कि निर्गमन 24:16; निर्गमन 40:35; गिनती 9:16-18 और अन्य अनेक स्थानों पर, जहाँ "शाकन" शब्द का प्रयोग हुआ है। यह शब्द तम्बू में प्रकट हुई रहस्यमयी "शेकिनाह" उपस्थिति के लिए भी प्रयुक्त होता है। "मिश्कान (mishkan)" शब्द, जो "शाकन" से निकला है, कई बार "तम्बू" कहकर अनुवादित किया जाता है। तम्बू के लिए इब्रानी में अधिकतर "ओहेल (ohel)" अर्थात् डेरा शब्द आता है। "मिश्कान" का अर्थ है "निवास स्थान।" अर्थात् उनका "निवास स्थान" जो "वास करते हैं" या "शेकिनाह।"

"कबोद यहोवा (kabod YHWH)" (प्रभु की महिमा) और "शेकिनाह" अनेक संदर्भों में एक समान हैं, जैसे सीनै पर्वत पर आग से घिरा हुआ बादल (निर्गमन 24:15-17), सुलैमान के मन्दिर का समर्पण, और यहेजकेल के दर्शन में यहोवा की महिमा के प्रस्थान और पुनः आगमन से सम्बन्धित प्रसंगों में।

हिब्रू क्रिया "शाकान" का सरल अर्थ है — किसी स्थान पर लंबे समय तक निरंतर निवास करना। इस शब्द और "याशव (yashav)" (जिसका अर्थ भी "निवास करना" है) के बीच भेद यह है: कि " याशव"

शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति के निवास करने के अर्थ में किया जा सकता है, जिसमें न तो अन्य लोगों का उल्लेख आवश्यक है और न ही अवधि का संकेत। परन्तु "शाकान" का अर्थ है किसी पड़ोस या लोगों के समूह के बीच लंबे समय तक निवास करना; कभी-कभी इसका प्रयोग केवल एक अन्य व्यक्ति के साथ निवास के लिए भी हो सकता है, पर वह इसका विस्तारित अर्थ है। इसका मुख्य अर्थ है — निवास करना और समुदाय के सदस्य के रूप में निरंतर बने रहना।

इस प्रकार, प्रभु की "शेकिनाह" महिमा का अर्थ है — अपने लोगों के समुदाय के बीच परमेश्वर की स्थायी और निरंतर रहने वाली उपस्थिति। इस प्रकार "शेकिनाह" उस परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता है, जो समय और स्थान की सीमाओं के भीतर भौतिक रूप से प्रकट हुई। उसे देखा जा सकता था। वह उपस्थिति इस त्रि-आयामी संसार में परमेश्वर के व्यक्तित्व का एक माध्यम थी।

निर्गमन 40:35 में जो बादल है, वह 'शेकिनाह' है।

निर्गमन 40:33-35
33 और उसने निवास के चारों ओर और वेदी के आसपास आँगन की कनात को खड़ा कराया, और आँगन के द्वार के परदे को लटका दिया। इस प्रकार मूसा ने सब काम को पूरा किया।
34 तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज *(कबोद kabod)* **निवास–स्थान में भर गया।**
35 और बादल मिलापवाले तम्बू पर ठहर *(शाकन shakan)* **गया, और यहोवा का तेज निवास–स्थान में भर गया, इस कारण मूसा उस में प्रवेश न कर सका।**

'शेकिनाह' परमेश्वर की वह महिमामयी उपस्थिति है, जिसे देखा जा सकता है। महिमा का बादल — यह परमेश्वर की महिमा है, जो घने बादल के रूप में प्रकट होती है (निर्गमन 40:34; 2 इतिहास 5:14)। परमेश्वर की महिमा बादल के रूप में देखी जा सकती है।

ऐतिहासिक विवरण: "अज़ूसा स्ट्रीट" (Azusa Street) 1906 की जागृति

फ्रैंक बार्टलमैन ने 1906 के "अज़ूसा स्ट्रीट" (Azusa Street) जागृति की एक सभा का वर्णन इस प्रकार किया:

"परमेश्वर हमारे इतने निकट आ गए कि स्वर्ग का वातावरण हमें चारों ओर से घेरे हुए प्रतीत हुआ। ऐसी दिव्य "महिमा का भार" हम पर था कि हम केवल अपने मुख के बल गिर सकते थे। लंबे समय तक हम बैठ भी नहीं सकते थे। सब लोग भूमि पर अपने मुख के बल पड़े रहते थे, कभी-कभी पूरी सभा के दौरान। मैं कई बार अपने आप को पूर्णतः भूमि पर मुख के बल लेटने से रोक नहीं पाता था।" (अज़ूसा स्ट्रीट,1980, फ्रैंक बार्टलमैन/Frank Bartleman)।

महिमा क्या है?

निर्गमन 33:18,19

18 मूसा ने कहा, "मुझे अपना तेज *(कबोद kabod)* **दिखा दे।"**
19 उसने कहा, "मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा; और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।"

परमेश्वर की महिमा उनकी भलाई, उनकी करुणा, उनकी दया — अर्थात् उनका स्वभाव और चरित्र है। यह परमेश्वर का भीतरी व्यक्तित्व है। वह जो कुछ हैं, वही उनकी महिमा है।

हम परमेश्वर की महिमा को मसीह के व्यक्तित्व में देखते हैं (2 कुरिन्थियों 4:6)।

यूहन्ना 2:11
यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिह्न दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उनके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

यीशु ने चिन्हों, आश्चर्यकर्मों और चमत्कारों के द्वारा परमेश्वर की महिमा को प्रकट किया।

परमेश्वर की महिमा की उपस्थिति, परमेश्वर जो कुछ हैं, उनका एक प्रत्यक्ष प्रकटीकरण है — चाहे वह भारी उपस्थिति के रूप में हो, या दिखाई देने वाले महिमा के बादल के रूप में — जो उनकी भलाई, दया, करुणा, महानता आदि को हमारे बीच चिन्हों, आश्चर्यकर्मों और चमत्कारों के द्वारा प्रकट करती है।

बाइबल का परमेश्वर पुराने और नये नियम के बीच नहीं बदला है (मलाकी 3:6)। यदि उनकी उपस्थिति पुराने नियम में महिमा की उपस्थिति के रूप में प्रकट हुई, तो ऐसा कोई कारण नहीं है, जिसकी वजह से आपको और हमें आज उनकी महिमा की उपस्थिति का अनुभव नहीं करना चाहिए!

जैसे मूसा ने परमेश्वर के लिए अधिक पुकारते हुए कहा, "मुझे अपनी महिमा दिखा," वैसे ही हमें भी उनकी महिमा की उपस्थिति के लिए — उनके और अधिक के लिए, उनके सम्पूर्ण स्वरूप के लिए — भूख रखनी चाहिए। हमें उनकी सामर्थ्य और उनकी महिमा को देखने की लालसा रखनी चाहिए।

भजन संहिता 63:1,2
(यहूदा के जंगल में दाऊद का भजन।)
[1] हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है,
मैं तुझे यत्न से ढूँढ़ूँगा;
सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर,
मेरा मन तेरा प्यासा है,
मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।
[2] इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की,
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ।

परमेश्वर की महिमा की उपस्थिति के लिए भूखे बनें!

क्या कारण है, कि उनकी महिमा, हमारे दायरे में प्रकट होती है?

स्तुति और आराधना परमेश्वर की महिमा को, हमारे बीच ले आती है

2 इतिहास 5:13,14

13 और जब तुरहियाँ बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियाँ, झाँझ आदि वाद्यों को बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊँचे शब्द से करने लगे,
"वह भला है
और उनकी करुणा सदा की है,"
तब यहोवा के भवन में बादल छा गया,
14 और बादल के कारण याजक लोग सेवा–टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।

समर्पित जीवन

एक समर्पित जीवन परमेश्वर की महिमा के प्रकटीकरण को आकर्षित करता है।

यूहन्ना 14:21

जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।

देखने के लिए विश्वास करना आवश्यक है

भजन संहिता 27:13

यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की
पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा,
तो मैं मूर्च्छित हो जाता।

जैसा कि हमने निर्गमन 33:19 में देखा, परमेश्वर की भलाई उनकी महिमा की एक अभिव्यक्ति है। हमें विश्वास करना चाहिए कि हम परमेश्वर की महिमा को उनकी भलाई के प्रकटीकरण के द्वारा *"इसी वर्तमान जीवन में"* देखेंगे। (द गुड न्यूज़ ट्रांस्लेशन).

यूहन्ना 11:40
यीशु ने उससे कहा, "क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।"

नये नियम में *'डॉक्सा (doxa)'* शब्द का प्रयोग 'महिमा' के लिए हुआ है, जो इस संदर्भ में, परमेश्वर के स्वरूप और उनके कार्यों के प्रकटीकरण को दर्शाता है।

परमेश्वर की महिमा, हमारे बीच क्या प्रकट करती है?

परमेश्वर की महिमा की उपस्थिति, परमेश्वर जो कुछ हैं — उनकी भलाई, अनुग्रह और दया — उन्हें हमारे बीच प्रकट करती है। यह चमत्कारों, चंगाइयों, अलौकिक चिन्हों और उन सब बातों के द्वारा दिखाई देता है, जिन्हें परमेश्वर अपनी भलाई, अनुग्रह और दया से उण्डेलते हैं।

परमेश्वर के महिमा की उपस्थिति, परमेश्वर की गर्जना (आवाज़) को भी प्रकट करती है (भजन संहिता 18:13,14; भजन संहिता 29:3)।

जब हम एकत्र होकर उनकी उपस्थिति के लिए और अधिक लालसा रखते हैं, तब परमेश्वर अपनी महिमा हमारे बीच प्रकट करते हैं। हम उनकी उपस्थिति का भार अनुभव करते हैं। परमेश्वर की महिमा की उपस्थिति के अनेक और विविध प्रत्यक्ष प्रकटीकरण हो सकते हैं — जो उनकी भलाई, करुणा और दया को प्रकट करते हैं।

कभी-कभी, परमेश्वर अपनी महिमा की उपस्थिति को ऐसे कार्यों

के द्वारा प्रकट करते हैं, जो उनकी महिमा को दर्शाते हैं। जब सोने की धूल गिरती है, जब लोगों के हाथों में तेल प्रकट होता है, जब परमेश्वर दाँतों को सोने से भर देते हैं, जब जिनके अंग नहीं हैं उन्हें नए अंग मिल जाते हैं, जब कटे हुए अंग अचानक प्रकट हो जाते हैं, जब विकृत अंग सीधे होकर कार्य करने लगते हैं, जब धातु के प्रत्यारोपण अचानक वास्तविक मांस और हड्डियों से बदल दिए जाते हैं — ये सब और इनके अलावा भी बहुत कुछ, परमेश्वर की महिमा के ही प्रकटीकरण हैं!

परमेश्वर की भेंट, उनकी उपस्थिती की एक स्थायी निवास बन जाती है

परमेश्वर को इस रूप में देखा जाता है, कि वे पृथ्वी पर अपनी महिमा की उपस्थिति को प्रकट करना चाहते हैं। वे चाहते हैं, कि वे अपनी महिमा से पृथ्वी को ढक दें।

हबक्कूक 2:14
क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा *(कबोद kabod)* **के ज्ञान से**
ऐसी भर जाएगी
जैसे समुद्र जल से भर जाता है

परमेश्वर ने अपनी महिमा की उपस्थिति को, उस तम्बू को भरने के लिए प्रकट किया, जिसे मूसा ने जंगल में बनाया था (निर्गमन 40:33-35)। परमेश्वर की उसी महिमा के बादल ने सुलैमान के मन्दिर को भी भर दिया (2 इतिहास 5:11-14)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, कि जब मन्दिर का पुनर्निर्माण होगा, तो पिछले भवन की तुलना में, बाद का भवन अधिक महिमामय होगा (हाग्गै 2:9)।

आज हम, कलीसिया, जो परमेश्वर का मन्दिर हैं (1 कुरिन्थियों 3:16; 1 कुरिन्थियों 6:19; 2 कुरिन्थियों 6:16), वही स्थान हैं, जहाँ उनकी महिमा को निवास करना है।

इफिसियों 2:21,22
[21] जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, [22] जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास–स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।

परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा हम में निवास करते हैं। यह उनकी अदृश्य और स्थायी उपस्थिति है, जो उनके लोगों के बीच रहती है। लेकिन, परमेश्वर अपनी उपस्थिति को प्रकट करना चाहते हैं। वे पृथ्वी पर अपनी महिमा की उपस्थिति को प्रकट करना चाहते हैं।

मूसा को कहा गया था, कि वह तम्बू को स्वर्गीय नमूने के अनुसार बनाए। परमेश्वर पृथ्वी पर स्वर्ग की प्रतिकृति चाहते हैं। हमें ऐसा स्थान तैयार करना चाहिए जहाँ वे प्रसन्नतापूर्वक निवास करें। जब मूसा ने उसे स्वर्गीय नमूने के अनुसार बनाया, तब परमेश्वर की महिमा ने उतरकर तम्बू को भर दिया। जब पृथ्वी पर तम्बू वैसा ही हो, जैसा स्वर्ग में है — स्तुति और आराधना से भरा हुआ, समर्पित और पवित्र — तब परमेश्वर उसे अपनी महिमा की उपस्थिति से भर देंगे। तब हम यहाँ पृथ्वी पर उनकी महिमा की उपस्थिति का एक निवासस्थान बन जाएंगे।

यद्यपि हम परमेश्वर की एक भेंट के लिए भूखे हैं, हमें निरन्तर आगे बढ़ते रहना है और इसे बनाए रखना है, ताकि उनकी भेंट हमारे नगरों में — पृथ्वी पर — उसकी महिमा की उपस्थिति का स्थायी निवास बन जाए।

8
उनकी उपस्थिति की सामर्थ्य

भजन संहिता 63:1,2
[1] हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है,
मैं तुझे यत्न से ढूँढ़ूँगा;
सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर,
मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।
[2] इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की,
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ।

परमेश्वर के लिए हमारी लालसा इस इच्छा में प्रकट होती है, कि हम उनकी सामर्थ्य और उनकी महिमा को देखें। परमेश्वर की महिमा और सामर्थ्य के प्रकट होने की जुनूनी इच्छा रखना बिल्कुल भी गलत नहीं है।

परमेश्वर की उपस्थिति, उनकी सामर्थ्य का स्थान है

व्यवस्थाविवरण 4:37
और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन लिया, और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इसलिये निकाल लाया,

हबक्कूक 3:3,4
[3] ईश्वर तेमान से आया, पवित्र ईश्वर परान पर्वत से आ रहा है।
उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है,
और पृथ्वी उनकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है।*(सेला)*
[4] उनकी ज्योति सूर्य के तुल्य थी,
उनके हाथ से किरणें निकल रही थीं;
और इनमें उनका सामर्थ्य छिपा हुआ था।

1 कुरिन्थियों 5:4
कि जब तुम और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ्य के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य हमारे प्रभु यीशु के नाम से

2 थिस्सलुनीकियों 1:9
वे प्रभु के सामने से और उनकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे।

परमेश्वर की उपस्थिति ही उनकी सामर्थ्य का स्थान है। जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती है, वहाँ हम उनकी सामर्थ्य के प्रकट होने की अपेक्षा कर सकते हैं।

परमेश्वर की सामर्थ्य, परमेश्वर के महान कार्यों को प्रकट करती है

लूका 5:17
एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक वहाँ बैठे थे, जो गलील और यहूदिया के हर गाँव से और यरूशलेम से आए थे; और चंगाई करने के लिये प्रभु की सामर्थ्य उनके साथ थी।

लूका 6:17–19
17 तब वह उनके साथ उतरकर चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उनके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया, यरूशलेम, और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुत लोग,
18 जो उनकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये उनके पास आए थे, वहाँ थे। और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किए जाते थे।
19 सब उन्हें छूना चाहते थे, क्योंकि उनमें से सामर्थ्य निकलकर सब को चंगा करती थी।

प्रेरितों के काम 4:33
प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

प्रेरितों के काम 5:12–16
12 प्रेरितों के हाथों से बहुत चिह्न और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।
13 परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे।
14 विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे।
15 यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस आए, तो उनकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।
16 यरूशलेम के आसपास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

परमेश्वर की सामर्थ्य हमारे बीच में महान चमत्कार, चिन्ह और अद्‌भुत काम होने का कारण बनती है। जब भी हम परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं, हमें ऐसी बातों की आशा रखनी चाहिए।

विश्वास, परमेश्वर की सामर्थ्य को स्पर्श करता है

जब हम ऐसे वातावरण में होते हैं जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती है, तो हमें यह जानना चाहिए, कि परमेश्वर की सामर्थ्य हमारे बीच ही विद्यमान है।

केवल थोड़ा सा विश्वास पर्याप्त है, कि परमेश्वर की सामर्थ्य हमारे जीवन में — हमारे शरीरों में, हमारी परिस्थितियों में, और अन्य बातों में — कार्य करना आरम्भ कर दे, जिससे चंगाई हो, चमत्कार हों, और बहुत कुछ घटित हो।

लूका 8:43-48
43 एक स्त्री ने जिस को बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था, और जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे व्यय कर चुकी थी, तौभी किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी,

44 पीछे से आकर उनके वस्त्र के आँचल को छुआ, और तुरन्त उनका लहू बहना बन्द हो गया।
45 इस पर यीशु ने कहा, "मुझे किसने छुआ?" जब सब मुकरने लगे, तो पतरस और उनके साथियों ने कहा, "हे स्वामी, तुझे तो भीड़ दबा रही है और तुझ पर गिरी पड़ती है।"
46 परन्तु यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है, क्योंकि मैं ने जान लिया है कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है।"
47 जब स्त्री ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती, तब काँपती हुई आई और उनके पाँवों पर गिरकर सब लोगों के सामने बताया कि उसने किस कारण से उन्हें छुआ, और कैसे तुरन्त चंगी हो गई।
48 उसने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से चली जा।"

2 थिस्सलुनीकियों 1:11
इसी लिये हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे,

परमेश्वर हमारे विश्वास के कार्य को अपनी सामर्थ्य से पूरा करते हैं। जब हम अपना विश्वास प्रयोग करते हैं, तब परमेश्वर की सामर्थ्य क्रियाशील हो जाती है और अलौकिक बातों की अभिव्यक्ति होती है।

9
सामूहिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति का स्वागत

परमेश्वर की उपस्थिति पर यह अध्ययन संकलित किया गया है

1) उनकी उपस्थिति के लिए हमारी भूख को बढ़ाने के लिए और
2) हमें प्रोत्साहित करना कि हम उनकी उपस्थिति के प्रकट होने की उम्मीद रखें।

परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत समय में, उनसे मांगें और उनकी और अधिक उपस्थिति के लिए जुनूनी इच्छा रखें। परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत समय को सूखा, औपचारिक और एकरस धार्मिक कर्तव्य का प्रदर्शन न बनने दें। प्रतिदिन अपने जीवन में उनकी उपस्थिति की ताज़गी की इच्छा रखें।

इसी प्रकार, जब हम एकत्र होते हैं, तो केवल औपचारिकता के लिए कार्य न करें। जब हम आराधना करते हैं, जब हम वचन सुनते हैं, जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम उनकी — अर्थात् उनकी उपस्थिति के हमारे बीच प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होने की — इच्छा करें।

हमारी सामूहिक सभाएँ परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति से इस प्रकार परिपूर्ण हों, कि हर बार जब हम मिलें, तो वहाँ महान सामर्थी चमत्कार, परिवर्तित जीवन, उल्लेखनीय चंगाइयाँ और बहुत कुछ देखने को मिले!

- हे प्रभु, आपकी उपस्थिति की अग्नि हम पर गिरने दें!
- हे प्रभु, आपकी उपस्थिति का प्रकाश हमारे जीवनों को भर दे!

- हे प्रभु, आपकी उपस्थिति की वर्षा हम पर उण्डेली जाए! हे प्रभु, आपकी उपस्थिति की महिमा हम पर ठहर जाए!
- हे प्रभु, आपकी उपस्थिति की सामर्थ्य हमारे बीच अद्‌त कार्य उत्पन्न करे!

ऑनलाइन हमसे जुड़ें
(JOIN US ONLINE)

अंग्रेजी
(ENGLISH)

https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
https://instagram.com/allpeopleschurchbangalore
https://facebook.com/apcwo
https://youtube.com/apcbiblecollege
https://instagram.com/apcbiblecollege
https://youtube.com/APCMusicindia
https://www.youtube.com/@apc-free-christian-books
https://youtube.com/ChrysalisLifeCounseling
https://instagram.com/ChrysalisLifeCounseling

हिंदी
(HINDI)

https://youtube.com/APCHindi
https://www.instagram.com/apc_bangalore_hindi

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

***"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम 10:43)।**

***"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "* (रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के बारे में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The End Times
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

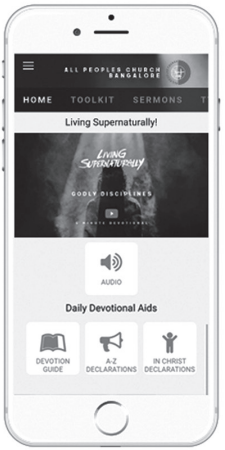

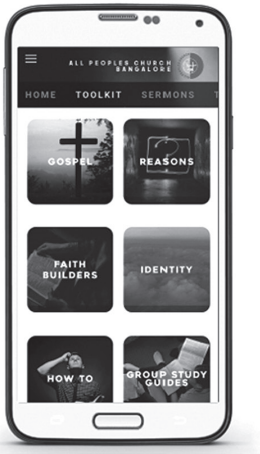

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

यह पुस्तक मूलतः परमेश्वर के वचन पर आधारित एक अध्ययन है, जो परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति के विषय में है। इसका उद्देश्य यह प्रस्तुत करना है कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में क्या प्रकट करता है, ताकि विश्वासियों को प्रेरणा और उत्साह मिले कि वे परमेश्वर को खोजें और उनकी उपस्थिति की और अधिक चाह रखें।

परमेश्वर के वचन में डूब जाएँ और उनकी उपस्थिति को अपने जीवन में आमंत्रित करें। जैसे-जैसे आप उनका अधिक पीछा करते हैं, वैसे-वैसे उनकी उपस्थिति को और अधिक अनुभव करने की अपेक्षा रखें। उनकी उपस्थिति के लिए और अधिक भूखे और प्यासे रहें। उनकी उपस्थिति में होना अर्थ है, कि आप ऐसे स्थान पर हों जहाँ आप उनके चेहरे को देख रहे हों—जहाँ आप उनके आमने-सामने हों। अन्य विश्वासियों के साथ मिलकर एकत्र हों और सामूहिक रूप से परमेश्वर की और उनके उपस्थिति की खोज करें। पृथ्वी की किसी भी वस्तु की तुलना, उनके साथ होने, और उनकी उपस्थिति का अनुभव करने से नहीं की जा सकती है!

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org